



## Aum Yajur Veda

### यजुर्वेद 1.1

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं  
प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशंसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बहवीर्यजमानस्य पशून्  
पाहि ।। 1 ।।

(इषे) इच्छा, प्रेरणा प्राप्त करना (त्वा) आपकी (उर्जे) शक्ति, बल (त्वा) आपकी (वायवः) सक्रिय प्राणिक ऊर्जा (स्थ) हो (देवः) सर्वोच्च दिव्य (वः) हमारे (सविता) सर्वोच्च निर्माता (प्रार्पयतु) सम्बद्ध करो, अच्छी तरह प्रेरित करो (श्रेष्ठतमाय) उत्तम के लिए (कर्मणे) कार्यों (आप्यायध्वम्) प्रगति तथा वृद्धि (अघ्न्याः) अहिंसक (इन्द्राय) सर्वोच्च नियंत्रक में से (भागम्) आपकी भूमिका, भोजन का हिस्सा (प्रजावतीः) आपकी प्रजा, अनुयायी (अनमीवा) रोग के दर्दों से मुक्त (अयक्ष्मा) श्वसन रोगों से मुक्त, आध्यात्मिक मार्ग की मुख्य बाधा से मुक्त (मा) नहीं (वः) आपकी (स्तेनः) चोरी (ईशत) इच्छा (मा) नहीं (अघशंसः) कोई पापी (ध्रुवाः) दृढ़ (अस्मिन्) इसमें (गोपतौ) इन्द्रियों का, वेदों का, गऊओं का संरक्षक (स्यात) हो (बहवीः) अनेक होओ (जिस प्रकार परमात्मा एक था और अनेक हो गया) (यजमानस्य) यज्ञ कार्यों का करने वाला (पशून्) पशु (पाहि) सदैव रक्षा करता है।

व्याख्या :-

हमारी सर्वोच्च प्रार्थना क्या होनी चाहिए?

एक भक्त के लिए परमात्मा की प्रेरणा, आश्वासन और आशीर्वाद क्या होते हैं?

‘सविता’, परमात्मा की निर्माण शक्ति, इस मन्त्र की देवी है।

यह मन्त्र परमात्मा के अनेकों आशीर्वाद सुनिश्चित करता है। हम परमात्मा से इन शब्दों में प्रार्थना करते हैं – ‘इषे त्वा उर्जे त्वा’ –हम आपकी इच्छा करते हैं। हम आपकी प्रेरणाएँ, शक्तियाँ, बल, उत्साह और ज्ञान का प्रकाश चाहते हैं।

इसके बाद हमें परमात्मा की निम्न प्रेरणाएँ, आश्वासन और आशीर्वाद प्राप्त होते हैं :-

1. वायवः स्थ – अनुभूति करो कि हम सबसे सक्रिय प्राणिक ऊर्जा हैं।
2. देवः वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे – सर्वोच्च दिव्य निर्माता हमें प्रेरित करो और उत्तम कार्यों के साथ अच्छे प्रकार से जोड़ दो।
3. आप्यायध्वम् – जीवन में प्रगति तथा वृद्धि प्राप्त करो।
4. अघ्न्याः – अहिंसक बनो।
5. इन्द्राय भागम् – सर्वोच्च नियंत्रक में से अपनी भूमिका और भोजन का भाग प्राप्त करो।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



6. प्रजावती: — आपको प्रजा और अनुयायी प्राप्त हों।
7. अनमीवा — रोगों के दर्दों से मुक्त रहो।
8. अयक्षा — श्वसन रोगों से मुक्त, आध्यात्मिक मार्ग की मुख्य बाधा से मुक्त रहो।
9. मा वः स्तेनः ईशत — कभी किसी की चोरी की इच्छा न करो।
10. मा अधश्सः — कभी किसी पापी की संगति या इच्छा न करो।
11. ध्रुवाः अस्मिन् गोपतौ स्यात — अपनी इन्द्रियों, वेद, गुरुओं का संरक्षक बनने के लिए दृढ़ रहो।
12. बह्वीः — अनेक बनो (जिस प्रकार परमात्मा एक था और अनेक हो गया)।
13. यजमानस्य पशून् पाहि — परमात्मा सदैव पशुओं का और यज्ञ करने वालों के लिए सभी सुविधाजनक साधनों का संरक्षण करता है।

जीवन में सार्थकता :-

यजुर्वेद का मुख्य ध्येय क्या है?

यज्ञ का अर्थ और इसके प्रभाव क्या हैं?

यजुर्वेद यज्ञ पर केन्द्रित है। इसलिए यजुर्वेद का पहला मन्त्र यज्ञ के जीवन की व्याख्या करते हुए उसकी प्रेरणा देता है। यह मन्त्र हमें परमात्मा के आशीर्वादों का भी आश्वासन देता है।

शुद्ध अग्नि में शुद्ध घी और उपयोगी जड़ी-बूटियों की आहुति देना सांकेतिक यज्ञ है। जबकि यज्ञ एक संस्कृति है और अन्य लोगों के कल्याण के लिए त्याग पूर्वक जीवन जीने का भक्ति मार्ग है। जब हम ऐसे जीवन के लिए प्रेरणाएँ, ऊर्जा और पदार्थ प्राप्त करने की इच्छा करते हैं तो हमें पूर्ण स्वस्थ जीवन, श्रेष्ठ जीवन, महान् परिवार और पूरी तरह से सुरक्षित सामाजिक तन्त्र के साथ-साथ आत्मा की यात्रा पर आध्यात्मिक प्रगति के आश्वासन मिलते हैं।

यज्ञ के तीन दृष्टिकोण हैं :-

**अधि भौतिक अर्थ :-** यज्ञ कार्य हमें लोगों के निकट लाते हैं और हमारे सामाजिक ढांचे को सुदृढ़ करते हैं। इसे संगतिकरण कहा जाता है अर्थात् सामाजिक संगठन।

**अधि दैविक अर्थ :-** यज्ञ कार्य प्रकृति की दिव्य शक्तियों को प्रसन्न करते हैं, क्योंकि सभी दिव्य शक्तियाँ सबके लिए कल्याण कार्यों में ही लगी हुई हैं। जिस प्रकार अग्नि यज्ञ प्रकृति के पाँचों तत्वों को शुद्ध करता है। इसे देव पूजा कहा जाता है अर्थात् दिव्य शक्तियों की पूजा

**आध्यात्मिक अर्थ :-** यज्ञ कार्य हमें परमात्मा के निकट लाते हैं। यज्ञ कार्यों को दान कहा जाता है जिससे हमारा भौतिक सांसारिक वस्तुओं से अलगाव प्रकट होता है। इस प्रकार अहंकार और इच्छाओं से मुक्त सच्चे और वास्तविक यज्ञ कार्य हमें परमात्मा के साथ जोड़ देते हैं।

**यज्ञ के तीन प्रभाव हैं।**

भौतिक रूप से यज्ञ वाला जीवन शारीरिक रोगों से मुक्त रहता है। दानशील व्यक्ति की धमनियाँ और शिराएँ आराम में रहती हैं।

मानसिक रूप से यज्ञ कार्य दूसरों का कल्याण करते हुए हमें अपार संतोष प्रदान करते हैं।

आध्यात्मिक रूप से यज्ञ कार्य हमें सभी दिव्य शक्तियों और लोगों के निकट लाते हैं और इस प्रकार परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करवाते हैं जो सभी दिव्य शक्तियों और लोगों का मूल स्रोत हैं।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



- सूक्ति :- 1. (इषे त्वा उर्जे त्वा – यजुर्वेद 1.1) – हम आपकी इच्छा करते हैं। हम आपकी प्रेरणाएँ, शक्तियाँ, बल, उत्साह और ज्ञान का प्रकाश चाहते हैं।
2. (देवः वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे – यजुर्वेद 1.1) – सर्वोच्च दिव्य निर्माता हमें प्रेरित करो और उत्तम कार्यों के साथ अच्छे प्रकार से जोड़ दो।
3. (यजमानस्य पशून् पाहि यजुर्वेद 1.1) – परमात्मा सदैव पशुओं का और यज्ञ करने वालों के लिए सभी सुविधाजनक साधनों का संरक्षण करता है।

### यजुर्वेद 1.2

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽसि।  
परमेण धाम्ना दृहस्व मा हवामा ते यज्ञपतिह्वार्षीत्।।2।।

(वसोः) यज्ञ से (पवित्रम्) शुद्ध करने वाले (असि) हो (द्यौः) अन्तरिक्ष आकाश (असि) हो (पृथ्वी) भूमि (असि) हो (मातरिश्वनः) वायु के, प्राणों के (घर्मः) गर्मी (असि) हो (विश्वधाः) समूचे विश्व के धारक (असि) हो (परमेण) सर्वोत्तम (धाम्ना) वैभव के साथ (दृहस्व) स्वयं को बलशाली और दृढ़ बनाओ (मा) नहीं (हवाः) त्याग दो, स्वयं को धोखा दो, लुटेरा (मा) नहीं (ते) आपके (यज्ञपतिः) यज्ञ के संरक्षक (ह्वार्षीत्) कड़े दृष्टिकोण वाला।

व्याख्या :-

यज्ञ का प्रभाव कहाँ तक जाता है?

यज्ञ शुद्धि करता है। यह इस सृष्टि के अन्तरिक्षक आकाश में स्थापित है और हमारे शरीर के खाली स्थान में स्थापित है अर्थात् मन और हृदय में। यह भूमि पर विस्तृत है। यह हमारी वायु और प्राणों की गर्मी है। यह सारे विश्व को धारण करता है। इसके उत्तम वैभव के साथ स्वयं को बलशाली और दृढ़ निश्चयी बनाओ। यज्ञ का कभी त्याग नहीं करना तथा स्वयं को दूसरों को धोखा देने वाला मत बनाओ और दूसरों की सम्पदा के लुटेरे मत बनो। यज्ञ का संरक्षक परमात्मा न तो आपका त्याग करेगा और न ही आपके लिए कड़ा दृष्टिकोण अपनायेगा।

जीवन में सार्थकता :-

यज्ञ करने वाले व्यक्ति का क्या स्तर होता है?

यज्ञ का प्रभाव सारी सृष्टि में फैलता है। यज्ञ हमारे जीवन जीने का मार्ग होना चाहिए, क्योंकि यह सारी सृष्टि का कार्य है। अतः जो व्यक्ति यज्ञ का त्याग नहीं करता, परमात्मा भी उसको अकेला नहीं छोड़ता, क्योंकि परमात्मा यज्ञ कार्यों का और दूसरों का कल्याण करने वाले यज्ञों को करने वाले का संरक्षक है।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



यज्ञ करने वाला व्यक्ति एक महान दानी बन जाता है, एक श्रेष्ठ आर्य पुरुष, अतः वह न दूसरों को धोखा देता है और न ही लुटेरा बनता है। परमात्मा ऐसे लोगों के लिए कठोर नहीं होता। यहाँ तक कि सरकारें और कानून भी ऐसे लोगों के लिए कठोर नहीं होते। यज्ञ करने वाले व्यक्ति का स्तर सामान्य रूप से सदैव समाज की दृष्टि में महान ही होता है और वह दिव्य शक्तियों तथा अन्ततः सर्वोच्च दिव्यता के साथ जुड़ जाता है।

### यजुर्वेद 1.3

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।  
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।3।।

(वसोः) यज्ञ से (पवित्रम्) शुद्ध करने वाले (असि) हो (शतधारम्) सैकड़ों धाराओं के धारण करने वाले (वसोः) यज्ञ से (पवित्रम्) शुद्ध करने वाले (असि) हो (सहस्रधारम्) हजारों धाराओं के धारण करने वाले (देवः) सर्वोच्च दिव्य (त्वा) आपको (सविता) परमात्मा की निर्माण शक्ति (पुनातु) शुद्ध करती है (वसोः) यज्ञ से (पवित्रेण) शुद्ध करने की शक्ति के साथ (शतधारेण) सैकड़ों धाराओं को धारण करते हुए (सुप्वा) सर्वोत्तम शुद्धिकर्ता (काम) इच्छाएँ (प्रकाश की) (अधुक्षः) निकालता है, प्राप्त करता है।

व्याख्या :-

हम यज्ञ से क्या इच्छाएँ करते हैं या क्या प्राप्त करते हैं?

यज्ञ शुद्ध करने वाला है और सैकड़ों, हजारों धाराओं (सम्पदा की, ज्ञान की और प्रकाश की) को धारण करने वाला है। सर्वोच्च दिव्य निर्माता आपको शुद्ध करता है। यज्ञों के साथ और पवित्र करने वाली शक्तियों के साथ जो सैकड़ों धाराओं को धारण करती है, आप सबसे अधिक शुद्ध हो जाते हो और आप अपनी सभी इच्छाओं (सम्पदा, ज्ञान और प्रकाश) को प्राप्त कर लेते हो।

जीवन में सार्थकता :-

एक वास्तविक यज्ञ और सामाजिक व्यापार में क्या अन्तर होता है?

जीवन के वास्तविक यज्ञ के बाद हमें क्या प्राप्त होता है?

यज्ञ के सभी कार्य दिव्य शक्तियों और परमात्मा के पास पहुँचते हैं जो ज्ञान और प्रकाश के साथ-साथ हर प्रकार की सम्पदा की असंख्य धाराओं को धारण करते हैं। यज्ञ गतिविधियों में प्रयोग होने वाले सभी साधन और पदार्थ परमात्मा के कोष से ही प्राप्त होते हैं। यदि पदार्थों की इच्छा से ही इन पदार्थों का प्रयोग यज्ञों में किया जाये तो यह यज्ञ नहीं है, यह एक सामान्य सामाजिक व्यापार है। वास्तविक यज्ञ कार्य हमें पवित्र करते हैं और अभौतिक सम्पदा तथा दिव्य ज्ञान के प्रकाश जैसी दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करवाते हैं। वेदों का सर्वोच्च दिव्य ज्ञान भी यज्ञों का परिणाम है जो प्राचीन ऋषियों ने कठोर तपस्या के रूप में सम्पन्न किये।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





सूक्ति :- समूचा मन्त्र ।

### यजुर्वेद 1.4

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः ।  
इन्द्रस्य त्वा भागं सोमेनातनन्मि विष्णो हव्यं रक्ष ॥ 4 ॥

(सा) वह (दिव्य ज्ञान) (विश्वायुः) पूर्ण आयु (सा) वह (दिव्य ज्ञान) (विश्वकर्मा) सबका कर्ता (सा) वह (दिव्य ज्ञान) (विश्वधायाः) सबकी माता, सबका पालन करने वाला (इन्द्रस्य) सर्वोच्च नियंत्रक का (त्वा) आपका (भागम्) हिस्सा (सोमेन) दिव्य ज्ञान, शुभ गुण (आतनन्मि) मेरे हृदय में स्थापित (विष्णो) सर्वत्र व्यापक परमात्मा (हव्यम्) आहुतियों और ज्ञान को (रक्ष) सुरक्षित ।

व्याख्या :-

दिव्य ज्ञान अर्थात् वेदों के क्या लाभ हैं?

जीवन के वास्तविक यज्ञ को करने के उपरान्त जो दिव्य ज्ञान हमें प्राप्त होता है वह हमारी आयु को पूर्ण करता है, हमारे कार्यों को पूर्ण करता है और पूरी तरह से हमारा पालन करता है ।

हे इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक! हम आपके दिव्य ज्ञान, वेदों, को अपने हृदय में धारण करते हैं । कृपया आप, सर्वत्र विद्यमान परमात्मा, हमारी आहुतियों और ज्ञान की रक्षा करो ।

जीवन में सार्थकता :-

वास्तविक यज्ञ और दिव्य ज्ञान हमारे जीवन को किस प्रकार पूर्ण करते हैं?

एक बार जब हम अपने जीवन को पूर्ण यज्ञ बना लेते हैं और दिव्य ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, यह तीन प्रकार से हमारे सम्पूर्ण जीवन में कार्य करता है :-

1. हमारी आयु अर्थात् हमारा जीवन ज्ञान के सभी आयामों में पूर्ण हो जाता है । हम एक शिष्य के जीवन को अर्थात् ब्रह्मचर्य को सफलतापूर्वक पार कर लेते हैं ।
2. हमारे कार्य और मानसिकता हर प्रकार से पूर्ण हो जाते हैं । हम अपनी सभी जिम्मेदारियों को पूर्ण कर पाते हैं । हम गृहस्थ जीवन के कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर लेते हैं ।
3. दिव्य ज्ञान शिक्षा की तरह फैलकर अन्य भी कई लोगों का पालन करता है । इस प्रकार हम सफलतापूर्वक अपने वानप्रस्थ अर्थात् समाजसेवी और संन्यास आश्रम के दायित्वों को भी पूर्ण कर लेते हैं ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जब यज्ञ और इसके परिणाम हमारे जीवन में स्थापित हो जाते हैं तो सर्वव्यापक, सर्वोच्च दिव्य परमात्मा हमारे कार्यों और ज्ञान की रक्षा करते हैं।

सूक्ति :- (सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः – यजुर्वेद 1.4) जीवन के वास्तविक यज्ञ को करने के उपरान्त जो दिव्य ज्ञान हमें प्राप्त होता है वह हमारी आयु को पूर्ण करता है, हमारे कार्यों को पूर्ण करता है और पूरी तरह से हमारा पालन करता है।

### यजुर्वेद 1.5

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।  
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥5॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रथम अग्रणी, ताप, अग्नि, ऊर्जा (व्रतपते) सभी पवित्र संकल्पों का रक्षक (व्रतम्) पवित्र संकल्प (चरिष्यामि) मैं धारण करूंगा, पालन करूंगा (तत्) उसको (व्रत को) (शकेयम्) बल को धारण करने के योग्य (तत्) उसको (व्रत को) (मे) मेरे (संकल्प) (राध्यताम्) मैं अनुभूति कर सकूँ, मैं नियंत्रण कर सकूँ (इदम्) यह (अहम्) मैं (अनृतात्) असत्य से दूर (सत्यम्) सत्य को (उपैमि) निकटता से प्राप्त करूँ।

व्याख्या :-

सत्य का संकल्प कैसे धारण करें?

अग्ने, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप सभी पवित्र संकल्पों के रक्षक हो। मैं पवित्र संकल्प को धारण करूंगा और उसका पालन करूंगा। मैं पूरे बल के साथ उस संकल्प को धारण करने के योग्य बनूँ। मैं उसकी अनुभूति प्राप्त कर सकूँ; मैं उस अपने संकल्प पर पूरा नियंत्रण प्राप्त कर सकूँ। मैं अपने निकट सत्य को प्राप्त करूँगा और असत्य से सदैव दूर रहूँगा।

जीवन में सार्थकता :-

हम सत्य का संकल्प धारण करने के लिए अग्नि का आह्वान क्यों करते हैं?

परमात्मा का अग्नि रूप वास्तव में हमें ऊर्जावान बनाता है। इसीलिए इस मन्त्र का ऋषि परमात्मा की दिव्य शक्ति, अग्नि का आह्वान करता है जो उसके सत्य धारण करने के संकल्प की रक्षा में सहायक हो सके। एक कमजोर व्यक्ति दिव्य शक्तियों के बल को प्राप्त नहीं कर सकता और न ही अपने संकल्पों की रक्षा कर सकता है। असत्य बोलने से मन की कमजोरी का प्रदर्शन होता है। जिससे मन और कमजोर होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अतः पूर्ण सत्यवादी मन का पवित्र संकल्प असमानान्तर बल को प्राप्त करने का सर्वोच्च संकल्प है। सत्य के इस संकल्प का पूर्ण नियंत्रक ही दिव्य शक्तियों के रूप में सत्य का मूल्य जानता है। सत्यवादी व्यक्ति की आभा अर्थात् वैभव दर्शनीय होता है।

इसलिए हम 'अग्नि', सर्वोच्च ऊर्जा का आह्वान करते हैं और उससे प्रार्थना करते हैं कि हमें इस संकल्प को बनाये रखने का बल प्रदान करें। यह केवल एक संकल्प हमें अनेकों अन्य कमजोरियों और गलत आदतों से बचा सकता है।

सूक्ति :- (इदम् अहम् अनृतात् सत्यम् उपैमि – यजुर्वेद 1.5) मैं अपने निकट सत्य को प्राप्त करूँगा और असत्य से सदैव दूर रहूँगा।

### यजुर्वेद 1.6

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति ।  
कर्मणे वां वेषाय वाम् ॥6॥

(कः) कौन (त्वा) आपको (युनक्ति) प्रेरित करता है, जोड़ता है, निर्देश देता है (सः) वह (परमात्मा) (त्वा) आपको (युनक्ति) प्रेरित करता है, जोड़ता है, निर्देश देता है (कस्मै) किस उद्देश्य के लिए (त्वा) आपको (युनक्ति) प्रेरित करता है, जोड़ता है, निर्देश देता है (तस्मै) उस उद्देश्य के लिए (यज्ञ, दिव्य ज्ञान और सत्य के लिए) (त्वा) आपको (युनक्ति) प्रेरित करता है, जोड़ता है, निर्देश देता है (कर्मणे) कर्मों के लिए (वाम्) तुम दोनों को (कर्म करने वाला और उसका लाभार्थी) (वेषाय) व्यापक होने के लिए (दिव्य ज्ञान और सत्य के माध्यम से) (वाम्) तुम दोनों को (शिक्षक और शिष्य; परमात्मा और भक्त)।

व्याख्या :-

इस जीवन का क्या उद्देश्य है?

उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें कौन प्रेरित करता है?

इस मन्त्र में उत्तर सहित दो प्रश्न व्यक्त किये गये हैं जिनका सार इस अध्याय के पिछले मन्त्रों के अनुरूप है।

प्रश्न :- कौन आपको प्रेरित करता है, जोड़ता है और निर्देश देता है?

उत्तर :- वह (परमात्मा) आपको प्रेरित करता है, जोड़ता है और निर्देश देता है।

प्रश्न :- किस उद्देश्य से वह आपको प्रेरित करता है, जोड़ता है और निर्देश देता है?

उत्तर :- उस उद्देश्य के लिए (यज्ञ, दिव्य ज्ञान और सत्य के लिए) वह (परमात्मा) आपको प्रेरित करता है, जोड़ता है और निर्देश देता है।

विगत मन्त्रों के अनुसार मानव जीवन का उद्देश्य बड़ा स्पष्ट और स्वाभाविक है – यज्ञ करना और दिव्य ज्ञान तथा सत्य को प्राप्त करना।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



परमात्मा यज्ञ करने वाले लोगों तथा उनके लाभार्थियों को प्रेरित करता है जिससे यज्ञ करने वाला तथा उसके कार्य परमात्मा के साथ व्यापक हो जायें।

जीवन में सार्थकता :-

हमें कर्म करने के लिए कौन नियुक्त करता है?

यज्ञ जीवन और अयज्ञ जीवन के क्या परिणाम हैं?

कोई भी व्यक्ति इस प्रश्न को अपने लिए प्रस्तुत करे कि किसने उसे इस कार्य में लगाया है। थोड़ा सा गहराई में विचार करने पर इसका उत्तर प्राप्त होगा कि सृष्टि में प्रत्येक जीव को उसके पूर्व कर्मों के अनुसार ही कार्य में लगाया गया है और निर्धारित क्षमता प्रदान की गई है, निःसंदेह हर जीव को प्रगति का अवसर भी दिया जाता है।

यदि हम केवल स्वार्थ, अहंकार, इच्छाओं और झूठ के विष को अपने कार्यों में शामिल करने से पूर्ण संयम बरत लें तो हमारा जीवन स्वतः ही यज्ञ जीवन बन जायेगा। केवल यज्ञ ही परमात्मा में शामिल होते हैं और यज्ञ करने वाले को व्याप्त कर देते हैं। जबकि अयज्ञ कार्य करने वाले को बार-बार जन्म और मृत्यु के चक्र का फल बार-बार प्रदान करते रहते हैं।

### यजुर्वेद 1.7

प्रत्युष्ट्रक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टुष्ट्रक्षो निष्टुष्टाऽअरातयः।  
उर्वन्तरिक्षमन्वेमि॥७॥

(प्रत्युष्टम्) उखाड़ दो, जला दो (रक्षः) बुरी वृत्तियाँ (प्रत्युष्टाः) उखाड़ दो, जला दो (अरातयः) यज्ञ रहित, दान रहित (निष्टुष्टम्) निश्चित रूप से नष्ट कर दो (रक्षः) बुरी वृत्तियाँ (निष्टुष्टाः) निश्चित रूप से नष्ट कर दो (अरातयः) यज्ञ रहित, दान रहित (उरु) महान्, विस्तृत (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष आकाश (अन्वेमि) मैं प्राप्त करता हूँ।

व्याख्या :-

बुरी वृत्तियों और यज्ञ रहित वृत्तियों के साथ क्या किया जाये?

बुरी वृत्तियों और यज्ञ न करने की आदत अर्थात् दान न देने की वृत्ति को उखाड़ दो, जला दो। बुरी वृत्तियों और यज्ञ न करने की आदत अर्थात् दान न देने की वृत्ति को निश्चित रूप से नष्ट कर दो। इस प्रकार मैं महान् और विस्तृत अन्तरिक्ष आकाश को प्राप्त करूंगा (अपने शरीर और मस्तिष्क में)।

जीवन में सार्थकता :-

श्रेष्ठ और यज्ञ जीवन का क्या परिणाम होता है?

समाज से अपराध निवारण और रोग निवारण को कैसे सुनिश्चित करें?





हमें बुरी वृत्तियों और यज्ञ न करने की आदतों को उखाड़ फेंकने और नष्ट करने पर ध्यान देना चाहिए। इसका अर्थ है कि हम श्रेष्ठ और यज्ञमय जीवन को सुनिश्चित करें, तभी हमारे शरीर और मस्तिष्क में आकाश की वृद्धि होगी। हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त होगा। केवल ईमानदार और त्यागशील लोग ही दिव्य ऊर्जाओं को प्राप्त करते हैं। शैक्षणिक संस्थाओं और जेलों में रहने वाले सभी लोगों को एक श्रेष्ठ जीवन और यज्ञ जीवन से प्रेरित किया जाना चाहिए। यह सूत्र सारे विश्व के लिए अपराध निवारण और रोग निवारण का माध्यम बन सकता है।

सूक्ति :- (प्रत्युष्टम् रक्षः प्रत्युष्टाः अरातयः – यजुर्वेद 1.7) बुरी वृत्तियों और यज्ञ न करने की आदत अर्थात् दान न देने की वृत्ति को उखाड़ दो, जला दो।

### यजुर्वेद 1.8

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।  
देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥८॥

(धुः) नष्ट करने वाला (असि) हो (धूर्व) नष्ट करो (धूर्वन्तम्) जो गिराता है (धूर्व) नष्ट करो (तम्) आप (यः) वह (अस्मान्) हमारे (धूर्वति) नष्ट करो (तम्) आप (धूर्व) नष्ट करो (यम्) जो (वयम्) हम (धूर्वामः) नष्ट करने का प्रयास करो (देवानाम्) सब दिव्यताओं का (असि) हो (वह्नितमम्) अधिकाधिक देने वाले (सस्नितम्) अधिकाधिक शुद्ध करने वाले (पप्रितम्) अधिकाधिक ज्ञान को देने वाले (जुष्टतम्) सभी विद्वानों के द्वारा सेवित (देवहूतम्) अधिकाधिक पूजा, दिव्य लोगों द्वारा आह्वान किया गया।

व्याख्या :-

उन सब बुराईयों का नाश कौन करता है जो हमारा नाश करती हैं और जिनको हम नष्ट करना चाहते हैं?

इस मन्त्र का देवता 'अग्नि' है जो भगवान की सर्वोच्च ऊर्जा है, जिन्हें इस मन्त्र में सम्बोधित किया गया है।

1. आप सब बुराईयों के नाशक हो जो हमें गिराती हैं।
2. आप उसको नष्ट करते हो जो हमें नष्ट करता है।
3. आप उसे नष्ट करते हो जिसको हम नष्ट करना चाहते हैं।
4. आप सभी दिव्यताओं को अधिक से अधिक देने वाले हो।
5. आप हमें अधिक से अधिक शुद्ध करते हो।
6. आप अधिकाधिक ज्ञान को देने वाले हो।
7. आप सभी विद्वानों के द्वारा सेवित हो।
8. आपको दिव्य लोग अधिक से अधिक पूजा करते हैं और आह्वान करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :—

हमारे अन्दर दिव्यताएँ कौन पैदा करता है?

हमें पवित्र कौन करता है?

दिव्य लोग किसकी पूजा और किसका आह्वान करते हैं?

हमें 'अग्नि' का आह्वान करना चाहिए, क्योंकि वह सब बलों का आधार है और यही वह प्रधान शक्ति है जो उन सभी बुराईयों को नष्ट कर सकती है जो उन्हें कमजोर करती हैं।

महान् विद्वान् और सन्त तपस्याएँ करके सदैव अग्नि का आह्वान करते रहे हैं। जिस प्रकार सांकेतिक यज्ञ अग्नि उत्पन्न करते हैं, उसी प्रकार यज्ञ गतिविधियाँ हमारे अन्दर दिव्य ऊर्जा उत्पन्न करती हैं, हमें शुद्ध करती हैं, हमें बल प्रदान करती हैं और हमारी बुराईयों और शत्रुओं को कमजोर करती हैं।

- सूक्ति :— 1. (धुः असि धूर्व धूर्वन्तम् — यजुर्वेद 1.8) आप सब बुराईयों के नाशक हो जो हमें गिराती हैं।  
2. (धूर्व तम् यः अस्मान् धूर्वति — यजुर्वेद 1.8) आप उसको नष्ट करते हो जो हमें नष्ट करता है।

### यजुर्वेद 1.9

अद्भुतमसि हविर्धानं दृहस्व मा हवामा ते यज्ञपतिर्हवर्षीत्।

विष्णुस्त्वा क्रमतामुरु वातायापहतर्क्षो यच्छन्तां पंच।।9।।

(अद्भुतम्) सरल, सीधा और प्राकृतिक, किसी भी धूर्तता से मुक्त (असि) हो (हविर्धानम्) आहुतियों के धारक (दृहस्व) दृढ़, स्थापित (मा) नहीं (हवाः) त्याग दो, अपने आपको धोखा देने वाले, लूटने वाले (माः) नहीं (ते) आपके (यज्ञपतिः) यज्ञ के संरक्षक (हवर्षीत्) कठोर (विष्णुः) सर्वव्यापक (त्वा) आप (वह यज्ञ) (क्रमताम्) विस्तृत (उरु) शुद्ध करने के लिए (वाताय) वायु (अपहतम्) नष्ट करने के लिए (र्क्षः) बुराईयों, धूर्तताएँ (यच्छन्ताम्) यज्ञ करो (पंच) पांच के साथ (इन्द्रियाँ, प्राण)।

व्याख्या :—

यज्ञ किस प्रकार 'विष्णु' का महिमागान करते हैं?

यह मन्त्र यज्ञ की संस्कृति का महिमागान करता है और यज्ञ के संरक्षण के लिए 'विष्णु', सर्वव्यापक, परमात्मा का आह्वान करता है :—

1. आप (यज्ञ कार्य और इसके करने वाले) सरल, सीधे, प्राकृतिक और धूर्तताओं से मुक्त हो।
2. आप आहुतियों को धारण करते हो।
3. आप दृढ़ निश्चयी और स्थापित हो।

यदि आप यज्ञ का त्याग नहीं करोगे तो यज्ञों का संरक्षक, परमात्मा, भी आपका त्याग नहीं करेगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



वह संरक्षक 'विष्णु', सर्वव्यापक, परमात्मा आपको (यज्ञ और उसके करने वालों को) वायु मण्डल शुद्ध करने के लिए, सभी बुराईयों और धूर्त वृत्तियों को नष्ट करने के लिए विस्तारित करता है। इसलिए अपनी पांचों इन्द्रियों और प्राणों के साथ यज्ञ करो।

जीवन में सार्थकर्ता :-

यज्ञ और इसके करने वालों के क्या लक्षण होते हैं?

यज्ञ का क्या उद्देश्य है?

यह मन्त्र यज्ञ कार्यों के और इसे सम्पन्न करने वाले के तीन लक्षण सूचीबद्ध करता है :-

1. यज्ञ कार्य और उसे करने वाले हृदय में और मन में शुद्ध होते हैं। उनके अन्दर किसी प्रकार का अहंकार या इच्छा नहीं होती, क्योंकि उनका लक्ष्य परमात्मा से मिलना होता है।
2. उनके पास यज्ञ के सभी साधन होते हैं।
3. वे कल्याण करने के लिए दृढ़ निश्चित होते हैं। यज्ञ किसी की कोई हानि नहीं कर सकता। यज्ञ करने वाला व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि नहीं चाहता।

जो व्यक्ति यज्ञ का त्याग नहीं करता, परमात्मा भी उसका त्याग नहीं करते।

यज्ञ का उद्देश्य दो मुखी है :-

(क) अग्नि यज्ञ से वायु की शुद्धि होती है। कल्याणकारी यज्ञ कार्यों से शरीर और मन की शुद्धि होती है।

(ख) अग्नि यज्ञ से अशुद्धताएँ नष्ट होती हैं। कल्याणकारी यज्ञ कार्यों से मन की अशुद्धताएँ नष्ट होती हैं।

सूक्ति :- (अद्भुतम् असि हविर्धानम् – यजुर्वेद 1.9) यज्ञ कार्य और उसे करने वाले हृदय में और मन में शुद्ध होते हैं। उनके अन्दर किसी प्रकार का अहंकार या इच्छा नहीं होती, क्योंकि उनका लक्ष्य परमात्मा से मिलना होता है।

### यजुर्वेद 1.10

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।  
अग्नये जुष्टं गृह्णाम्यग्नीषोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि॥10॥

(देवस्य) सर्वोच्च दिव्यता का (त्वा) आप (सवितुः) परमात्मा की निर्माण शक्ति (प्रसवे) सृष्टि (अश्विनोः) अश्विनों का (सूर्य और चन्द्र, गर्मी और शीतलता का जोड़ा) (बाहुभ्याम्) बांहों के साथ (पूष्णोः) पुष्टि का (हस्ताभ्याम्) हाथों से (अग्नये) अग्नि के द्वारा, ऊर्जा के द्वारा (जुष्टम्) भोग के लिए (गृह्णामि) मैं स्वीकार करता हूँ (अग्नि) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, अग्रणी, ताप, अग्नि, ऊर्जा (शोमाभ्याम्) सोम के द्वारा शुभगुणों आदि के द्वारा (जुष्टम्) भोग के लिए (गृह्णामि) मैं स्वीकार करता हूँ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

हमारे पूर्वज ऋषियों ने इस सृष्टि को प्राप्त करते हुए क्या आश्वासन दिया था?

इस मन्त्र का देवता 'सविता' है अर्थात् परमात्मा की निर्माण शक्ति।

प्राचीन ऋषियों ने सृष्टि निर्माता का आह्वान किया और उसे आश्वासन दिया कि "मैं अश्विनों की बाहों के साथ आपकी सृष्टि को स्वीकार करता हूँ अर्थात् सूर्य और चन्द्रमा के माध्यम से, गर्मी और सर्दी के माध्यम से, पोषण करने वाली शक्तियों के हाथ से।

मैं अग्नि अर्थात् ऊर्जा और सोम अर्थात् शुभगुण और ज्ञान का भोग करने के लिए इस सृष्टि को स्वीकार करता हूँ।"

जीवन में सार्थकर्ता :-

क्या आप अपने पूर्वज ऋषियों के साथ एक श्रृंखला को महसूस करते हो या विश्वास करते हो?

जिस प्रकार हम अपने अधिकार और सम्पत्तियों को स्वीकार करते हैं, क्या हम अपनी जिम्मेदारियों और दायित्वों को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं?

यह सम्पूर्ण सृष्टि अनेकों बाहों के साथ, जैसे सूर्य-चन्द्रमा तथा अन्य आकाशीय पिण्ड, सभी जीवों के लिए हैं और उन सबका पालन-पोषण करने के लिए सबको मातृवत् बाहें प्राप्त होती हैं। इसका एक विज्ञान की तरह निरीक्षण करो और निर्माता को वैज्ञानिक रूप से अनुभूति में लाने का प्रयास करो।

इस सृष्टि का उपयोग केवल दो उद्देश्यों के लिए करना चाहिए :-

(क) सृष्टि की ऊर्जा को बनाये रखते हुए सभी जीवों में ऊर्जा की वृद्धि करना।

(ख) सभी जीवों के कल्याण के लिए मनुष्यों में शुभ गुणों और ज्ञान की वृद्धि करना।

एक प्राप्तकर्ता का यह नैतिक और कानूनी दायित्व होता है कि वह अनुदान को उसी उद्देश्य के लिए प्रयोग करे जिसके लिए उसे अनुदान दिया गया। हमारे ऋषियों ने परमात्मा को यही आश्वासन दिया था। यदि हम अपने पूर्व ऋषियों के साथ एक श्रृंखला की अनुभूति करते हैं और उस पर विश्वास करते हैं तो हमें भी उस आश्वासन का पालन करना चाहिए। सृष्टि में अन्य भौतिक पदार्थों की तरह, वेद, दिव्य ज्ञान भी हमें हमारे अधिकार और दायित्व की तरह प्राप्त हुआ है।

सूक्ति :- (अग्नि शोमाभ्याम् जुष्टम् गृह्णामि – यजुर्वेद 1.10) मैं अग्नि अर्थात् ऊर्जा और सोम अर्थात् शुभगुण और ज्ञान का भोग करने के लिए इस सृष्टि को स्वीकार करता हूँ।

यजुर्वेद 1.11

भूताय त्वा नारातये स्वरभिविख्येषं दृहन्तां दुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि।

पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्याऽउपस्थेऽग्ने हव्यं रक्ष॥11॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





(भूताय) सभी जीवों के लिए (त्वा) आप (ना) नहीं (अरातये) अदानियों के लिए, बुरे कार्यों के लिए (स्वः) स्वयं, सुखदायक वातावरण (अभि विख्येषम्) चारों तरफ देखता है (दृहन्ताम्) स्थापित, वृद्धि, बल देता है (दुर्याः) हमारे अश्व (पृथिव्याम्) भूमि पर (उर्वन्तरिक्षम्) मध्य आकाश में (अन्वेमि) मैं प्राप्त करता हूँ (पृथिव्याः) इस धरती का (त्वा) आप (अग्नि) (नाभौ) केन्द्र में (सादयामि) मैं स्थापित करता हूँ (आदित्याः) शाश्वत प्रकाश (उपस्थे) मैं स्थापित करता हूँ (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रथम अग्रणी, ताप, अग्नि, ऊर्जा (हव्यम्) आहुति के लिए पदार्थ (रक्ष) सुरक्षित।

व्याख्या :-

यज्ञ करने वाला किस प्रकार 'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा की प्रशंसा, आह्वान और प्रार्थना करता है? सृष्टि के निर्माता को आश्वासन देने के बाद और 'अग्नि' को प्राप्त करते हुए ऋषि अब 'अग्नि' की प्रशंसा, आह्वान और उससे प्रार्थना करता है :-

1. मैं सभी जीवों के लिए आपको प्राप्त करता हूँ, अदानियों और बुरी प्रवृत्ति वालों के लिए नहीं।
2. इस यज्ञ अग्नि के द्वारा, मैं अपने मूल स्वरूप को और चारों तरफ स्वर्ग तुल्य वातावरण को देखता हूँ और अनुभूति प्राप्त करता हूँ।
3. इस यज्ञ अग्नि के द्वारा हमारे घर दृढ़ता के साथ स्थापित रहें, वृद्धि को प्राप्त हों और हमें बल प्रदान करें।
4. मैं आपको भूमि पर और मध्य आकाश में प्राप्त करता हूँ और दर्शन करता हूँ।
5. मैं आपको धरती के केन्द्र में स्थापित करता हूँ।
6. मैं आपको शाश्वत प्रकाश की तरह स्थापित करता हूँ और आपकी अनुभूति करता हूँ।
7. कृपया आहुति के लिए सभी पदार्थों की रक्षा करो।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमारे यज्ञ कार्य और ऊर्जा किस प्रकार सुरक्षित होते हैं?

'अग्नि' दृश्य रूप में अग्नि यज्ञ की 'अग्नि' है; हमारे जीवन में, यह हमारे कार्यों की ऊर्जा है। यदि हमारे कार्य दूसरों के कल्याण के लिए होते हैं तो उन्हें यज्ञ कार्य कहा जाता है। ऐसे यज्ञ कार्यों और ऊर्जा के माध्यम से हमें अनेकों लाभ प्राप्त होते हैं :- भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक। हमारा जीवन सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, की प्रगतिशील अनुभूति के साथ वास्तव में स्वर्ग के तुल्य बन जाता है जो निश्चित रूप से यज्ञ कार्यों, ऊर्जा और हमारे जीवन की रक्षा करते हैं।

सूक्ति :- (भूताय त्वा ना अरातये – यजुर्वेद 1.11) मैं सभी जीवों के लिए आपको प्राप्त करता हूँ, अदानियों और बुरी प्रवृत्ति वालों के लिए नहीं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



### यजुर्वेद 3.11

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये ।

आरे अस्मे च शृण्वते ॥ 1 ॥

(उपप्रयन्तः) निकट होना और अच्छी तरह जानना (अध्वरम्) अहिंसक यज्ञ, स्वार्थरहित यज्ञ कार्य (मन्त्रम्) मन्त्रों को और श्रेष्ठ विचारों को (वोचेम) उच्चारण करना, कहना (अग्नये) अग्नि के लिए, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा के लिए (आरे) दूर से (अस्मे) हमें (च) और (निकट से) (शृण्वते) सुनना (परमात्मा को) ।

Note : This mantra is same as RV 1.74.1 and SV 1379.

व्याख्या :-

परमात्मा किसे प्रत्येक अवस्था में सुनता है?

प्रत्येक मनुष्य को पूरी चेतना के साथ अहिंसक यज्ञों, स्वार्थरहित कल्याण कार्यों के निकट होना चाहिए और वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए या अग्नि, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा के लिए श्रेष्ठ विचारों को प्रकट करना चाहिए। वह (परमात्मा) ऐसे लोगों को दूर और निकट से सुनता है। अग्नि यज्ञों को सम्पन्न करते हुए भी हम पवित्र अग्नि को आहुतियाँ देने के साथ-साथ मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। हमारी आहुतियाँ अग्नि के लिए होती हैं, परन्तु हमारे द्वारा उच्चारित मन्त्र परमात्मा के लिए होते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुग का विशेष ध्यान में रखने योग्य लक्षण क्या हैं?

यज्ञ अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए हमारे त्याग ही मनुष्यों का एक मात्र कार्य है जिसके साथ-साथ दूसरों के कल्याण के लिए वैदिक वाणियाँ, सत्यतापूर्ण और प्रेम से भरी हुई वाणियाँ सम्मिलित हैं। परमात्मा निश्चित रूप से ऐसे लोगों की सुनता है।

यज्ञ का विपरीत शब्द है लूटना। जो कलियुग का एक लक्षण बन चुका है। अधिकांश लोग धन कमाने की पागल दौड़ का अनुसरण कर रहे हैं, यहाँ तक कि झूठ बोलकर और दूसरों को धोखा देकर भी। यही कलियुग का ध्यान में रखने लायक लक्षण है। हमें अपने जीवन में इस लक्षण से दूर रहना चाहिए।

यहाँ तक कि कल्याणकारी गतिविधियाँ भी प्रसिद्धि के लिए सम्पन्न की जाती हैं। इस प्रकार अहंकारपूर्ण यज्ञ कार्य भी हिंसक बन जाते हैं, क्योंकि इन्हें सम्पन्न करने वाला व्यक्ति यह भूल जाता है कि सभी कार्यों का वास्तविक कर्ता और सभी पदार्थों का दाता केवल परमात्मा ही है, जबकि वह व्यक्ति प्रसिद्धि को भी लूट रहा होता है जो वास्तव में परमात्मा के लिए निर्धारित थी।

### यजुर्वेद मन्त्र 3.14

Yajurveda 3.14

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः ।  
तं जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्धया रयिम ॥

(अयम्) यह (ते) आपका (योनिः) आवास (यह ब्रह्माण्ड, यह शरीर) (ऋत्वियः) प्रत्येक ऋतु में, प्रतिक्षण (यतः) जहाँ से (जातः) प्रकट हुए, उत्पन्न हुए (अरोचथाः) प्रकाशित (तम्) आपको (जानन) जानते हुए (अग्ने) हे ऊर्जा (आ रोह) प्रगति (अथ) अब, अतः (नः) हमारे (वर्धया) वृद्धि (रयिम) सम्पदा (भौतिक एवं आध्यात्मिक)

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 3.29.10 में परिवर्तन के साथ आया है। ऋग्वेद 3.29.10 में 'आ रोह' के स्थान पर 'आसीद' तथा 'रयिम' के स्थान पर 'गिरः' का परिवर्तन है।

व्याख्या :-

परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, कहाँ पर रहते हैं?

यह ब्रह्माण्ड (शरीर) प्रत्येक ऋतु में और प्रत्येक क्षण आपका आवास हैं, जहाँ से आपका उदय होता है, आप प्रकट होते हो और प्रकाशित होते हो।

हे अग्नि! आपको जानते हुए ही हम प्रगति करते हैं। अतः, कृपया हमारी सम्पदा (भौतिक एवं आध्यात्मिक) को बढ़ाओ।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे कार्य परमात्मा के कार्य कैसे बन सकते हैं?

अपनी सम्पदा में वृद्धि करने के लिए हमें क्या प्रार्थना करनी चाहिए?

प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिक्षण यह चेतना रखनी चाहिए कि समूचा ब्रह्माण्ड और हमारा शरीर परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा का आवास हर समय के लिए है। वह ऊर्जा हमारे आस-पास हर स्थान पर और हमारे अन्दर उदय होती है, प्रकट होती है और प्रकाशित होती है। हमारे सभी कार्य उस ऊर्जा कार्य माने जाते हैं अर्थात् परमात्मा के, क्योंकि प्रत्येक कार्य ऊर्जा के साथ ही होता है और उस ऊर्जा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। केवल इस चेतना के साथ ही हमें भौतिक और आध्यात्मिक सम्पदा की प्रगति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जिससे हम यज्ञ कार्यों को कर सकें जो परमात्मा के कार्य बन जायें। केवल सकारात्मकता ही परमात्मा को प्रस्तुत की जाती है और उसके द्वारा स्वीकार होती है। अपने शरीर और मन की सभी नकारात्मकताओं का त्याग कर देना चाहिए। सभी स्वार्थी कार्यों और विचारों का त्याग कर देना चाहिए।

नोट :- ऋग्वेद 3.29.10 की दूसरी लाइन इस प्रकार है :- तं जानन्नग्न आ सीदाथा नो वर्धया गिरः - इसका अर्थ है - हे अग्नि! आपको जानते हुए ही हम आपको अपने अन्दर (अपने हृदय में) स्थापित करते हैं। अतः, कृपया हमारी वाणी को बढ़ाओ (आपकी महिमागान के लिए)।

ऋग्वेद मुख्यतः ज्ञान वेद है। इसलिए इस मन्त्र में परमात्मा को अपने हृदय में स्थापित करने की प्रेरणा है जो हमें ज्ञान और वाणी में संवर्द्धन प्रदान करे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जबकि यजुर्वेद मुख्यतः कर्मवेद है, इसलिए इस मन्त्र में यज्ञों को सम्पन्न करने के लिए सम्पदा की प्रार्थना की गई है।

सूक्ति :-

(अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः। यजुर्वेद 3.14, ऋग्वेद 3.29.10)

यह ब्रह्माण्ड (शरीर) प्रत्येक ऋतु में और प्रत्येक क्षण आपका आवास हैं, जहाँ से आपका उदय होता है, आप प्रकट होते हो और प्रकाशित होते हो।

**यजुर्वेद मन्त्र 3.15**

**Yajurveda 3.15**

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः।

यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेषिशे ।।

(अयम्) यह (परमात्मा, अग्नि, सर्वोच्च ऊर्जा) (इह) यहाँ (संसार में, हृदय में) (प्रथमः) सर्वोत्तम, सर्वोच्च (धायि) धारण किया (धातृभि) धारण करने योग्य के साथ (दूसरों का पालन-पोषण करने के लिए) (होता) लाने वाला और देने वाला (कल्याणकारी यज्ञों के लिए पदार्थ) (यजिष्ठः) संगति के योग्य (अध्वरेषु) अहिंसक यज्ञ (ईड्यः) खोज और अनुभूति के योग्य (यम) जिसे (अप्नवानः) गहरे ज्ञान के विशेषज्ञ (भृगवः) तपस्याओं और कल्याणकारी यज्ञों को करने वाले (विरुरुचः) स्वयं को ज्ञान से प्रकाशित करना (वनेषु) विभाग करने वालों के लिए, बांटने वालों के लिए (अन्य लोगों के बीच सम्पदा) (चित्रम्) अद्भुत, विशेष (विभ्वम्) विशेष रूप से प्रसिद्ध, जाना गया (विशे विशेषे) सभी स्थानों पर।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 4.7.1 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा को धारण करने में सक्षम कौन है?

हमें परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा के बारे में गहरा ज्ञान क्यों प्राप्त करना चाहिए?

यह (परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा) यहाँ पर सर्वोत्तम है (इस ब्रह्माण्ड में, हमारे हृदय में) और यह उन सभी के द्वारा धारण करने के योग्य है जो धारण करने में सक्षम हैं (अन्य लोगों का पालन-पोषण करने में)।

वह अहिंसक कल्याणकारी यज्ञों के लिए सभी पदार्थों को लाने वाला और देने वाला है; वह संगतिकरण के योग्य है; वह खोज और अनुभूति के योग्य है, जिसके साथ गहरे ज्ञान के विशेषज्ञ, तपस्याओं और कल्याणकारी यज्ञों को करने वाले अपने-अपने जीवन में दिव्य ज्ञान से स्वयं को प्रकाशित करते हैं। ऐसे लोग सब लोगों में एक बलशाली चरित्र की तरह प्रसिद्ध होते हैं जो अपनी सम्पदा दूसरों में बांटते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य ऊर्जा क्या है?

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





राक्षसी ऊर्जा क्या है?

जो व्यक्ति अन्य लोगों की समस्याओं को धारण करने के योग्य है, दूसरों को सहायता और समर्थन देता है, अपने व्यक्तिगत अहंकार और इच्छाओं को त्याग देता है, केवल वही परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा को धारण करता है। यह दिव्य ऊर्जा ऐसे लोगों के जीवन में एक बलशाली आधार बन जाती है।

ऐसे लोगों के द्वारा जब दूसरों के लिए ऊर्जा का उपयोग किया जाता है तो वह दिव्य कहलाती है, सकारात्मक दिखाई देती है और सदैव बढ़ती रहती है। जबकि अपने स्वार्थी हितों के लिए प्रयोग की गई ऊर्जा राक्षसी कहलाती है, नकारात्मक लगती है और धीरे-धीरे घटती जाती है।

यह मन्त्र वैज्ञानिकों को भी प्रेरित करता है कि वे इस सृष्टि में विद्यमान प्रत्येक पदार्थ के अन्दर ऊर्जा की खोज और आविष्कार करें जिससे सकारात्मक रूप से उसका भरपूर उपयोग हो सके अर्थात् कल्याण के लिए, किसी विनाश के लिए नहीं या स्वार्थी हितों के लिए भी नहीं।

सूक्ति :-

(अयम् इह प्रथमः धायि धातृभिः। ऋग्वेद 4.7.1, यजुर्वेद 3.15)

यह (परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा) यहाँ पर सर्वोत्तम है (इस ब्रह्माण्ड में, हमारे हृदय में) और यह उन सभी के द्वारा धारण करने के योग्य है जो धारण करने में सक्षम हैं (अन्य लोगों का पालन-पोषण करने में)।

यजुर्वेद मन्त्र 3.25

Yajurveda 3.25

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरुथ्यः।

वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (त्वम्) आप (नः) हमारे (अन्तमः) गहरे आन्तरिक (अन्दर का सब कुछ जानते हुए) (उत) और (त्राता) संरक्षक, बचाव करने वाला (शिवः) कल्याण करने वाला (भवा) हो (वरुथ्यः) सर्वोत्तम आवरण (वसुः) सबका आवास (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (वसु) सबका आवास (श्रवा) श्रवण शक्ति (अच्छा) उत्तम (नक्षि) सर्वत्र विद्यमान (द्युमत्तमम्) प्रकाश के साथ संयुक्त (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा (दाः) प्रदान करो।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 5.24.1 व 2 का संयुक्त रूप है।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमारा गहरा आन्तरिक सहभागी कौन है?

वह, 'अग्नि' हमारे लिए क्या कर सकता है?

हे सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप हमारे गहरे आन्तरिक हो जो अन्दर से हमारा सबकुछ जानते हो और सभी सुविधाओं में हमारे संरक्षक बनकर हमारा बचाव करते हो। कृपया हमारे कल्याण के लिए हमारे सर्वोत्तम आवरण बन जाओ।

आप ऊर्जा के रूप में सर्वत्र विद्यमान हो। आप श्रवण शक्ति के रूप में विद्यमान हो जिससे हम आपको सुन सकें। आप सर्वत्र उत्तम प्रकार से विद्यमान हो। कृपया हमें प्रकाश से संयुक्त गौरवशाली सम्पदा प्रदान करो।

जीवन में सार्थकता :-

हम सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा का आह्वान कैसे कर सकते हैं?

परमात्मा ऊर्जा के रूप में सर्वविद्यमान हैं। अग्नि यज्ञों के माध्यम से हम ऊर्जा का आह्वान करते हैं। पूजा और ध्यान आदि के माध्यम से भी हम ऊर्जा का आह्वान करते हैं। यज्ञ कार्यो से हम सबके कल्याण के लिए ऊर्जा का आह्वान करते हैं।

जब हम परमात्मा की विद्यमानता अर्थात् अपने अन्दर शुद्ध ऊर्जा की अनुभूति कर लेते हैं तो हम उसे सुनते हुए अर्थात् इस ब्रह्माण्ड में तरंगित होते हुए वैदिक ज्ञान को सुनते हुए अध्यात्म प्रकाश के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। ध्यान और जीवन के सत्य यज्ञ कार्य उसकी अनुभूति के माध्यम हैं।

सूक्ति 1 :-

(अग्ने त्वम् नः अन्तमः उत त्राता । ऋग्वेद 5.24.1, यजुर्वेद 3.25, सामवेद 1107)

हे सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप हमारे गहरे आन्तरिक हो जो अन्दर से हमारा सबकुछ जानते हो और सभी सुविधाओं में हमारे संरक्षक बनकर हमारा बचाव करते हो।

सूक्ति 2:-

(शिवः भवा वरूथ्यः । ऋग्वेद 5.24.1, यजुर्वेद 3.25, सामवेद 1107)

कृपया हमारे कल्याण के लिए हमारे सर्वोत्तम आवरण बन जाओ।

सूक्ति 3:-

(वसुः अग्निः वसु श्रवा । ऋग्वेद 5.24.2, यजुर्वेद 3.25, 15.48 सामवेद 1108)

आप ऊर्जा के रूप में सर्वत्र विद्यमान हो। आप श्रवण शक्ति के रूप में विद्यमान हो जिससे हम आपको सुन सकें।

यजुर्वेद मन्त्र 3.26

Yajurveda 3.26

तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णो आघायतः समस्मात् ।।

(तम्) वह (त्वा) आपको (शोचिष्ठ) अत्यन्त शुद्ध (दीदिवः) दिव्यता के स्वप्रकाशित प्रकाश का देने वाला (सुम्नाय) सुखों और प्रसन्नताओं के लिए (नूनम्) निश्चित रूप से (ईमहे) प्रार्थना (सखिभ्यः) श्रेष्ठ मित्रों के लिए। (सः) वह (आप) (नः) हमें (बोधि) अनुभूति के साथ संयुक्त (श्रुधी) सुनो (हवम्) हमारी प्रार्थनाएँ (यज्ञों से जुड़ी हुई, सुनने योग्य) (उरुष्या) कृपया पृथक करो (नः) हमें (आघायतः) दूसरों को कष्ट देने वाले पापों से, पापियों से (समस्मात्) सभी प्रकार के।

नोट :- इस मन्त्र की प्रथम पंक्ति ऋग्वेद 5.24.4 के समान है और दूसरी पंक्ति ऋग्वेद 5.24.3 के समान है।

व्याख्या :-

दिव्यता के स्वप्रकाशित प्रकाश का दाता और पूरी तरह से शुद्ध कौन है?

यज्ञ कार्यों के लिए हमारी प्रार्थनाएँ कौन सुनता है?

हम अपने श्रेष्ठ मित्रों के लिए सभी सुखों, प्रसन्नताओं की प्रार्थना उस आपसे करते हैं जो पूरी तरह से शुद्ध और दिव्यताओं के स्वप्रकाशित प्रकाश का दाता है।

वह, 'अग्नि', अनुभूति के साथ हमारे संघ जुड़ता है और हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है (यज्ञ कार्यों के लिए सुनने योग्य)। कृपया हमें पूर्ण रूप से उन सभी पापों से पृथक करो जो दूसरों को कष्ट देते हैं और सभी पापियों से भी।

जीवन में सार्थकता :-

अनुभूति के पथ पर सबसे प्रथम और सबसे मुख्य आवश्यकता किस चीज की है?

जब हम यह जान लेते हैं और विश्वास करते हैं कि परमात्मा, अग्नि और सर्वोच्च ऊर्जा अत्यन्त शुद्ध और स्वप्रकाशित दिव्यता के दाता हैं तो हमें उनकी अनुभूति के पथ पर अग्रसर होना चाहिए। पापों और पापियों से पूरी तरह पृथक रहना ही इस पथ की पहली और अन्तिम माँग है जिससे हम शुद्धता का विकास कर सकें। इस पथ पर हमारे शुद्धिकरण के लिए यज्ञ कार्यों से सम्बन्धित सभी प्रार्थनाएँ भगवान निश्चित रूप से सुनते हैं। वे हमें तथा हमारे जैसे विचारों वाले लोगों को सभी सुख-सुविधाएँ प्रदान करते हैं।

सूक्ति-1 :-

(सः नः बोधि श्रुधी हवम् । ऋग्वेद 5.24.3, यजुर्वेद 3.26)

वह, 'अग्नि', अनुभूति के साथ हमारे संघ जुड़ता है और हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है (यज्ञ कार्यों के लिए सुनने योग्य)।

सूक्ति-2 :-

(उरुष्या नः आघायतः समस्मात् । ऋग्वेद 5.24.3, यजुर्वेद 3.26)

कृपया हमें पूर्ण रूप से उन सभी पापों से पृथक करो जो दूसरों को कष्ट देते हैं और सभी पापियों से भी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



### यजुर्वेद 3.35

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।  
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ऋग्वेद 3.62.10, यजुर्वेद 3.35, 30.2, 36.3, सामवेद 1462

(ओ३म्) ब्रह्माण्ड की ध्वनि जो सर्वत्र तरंगित है (परमात्मा का मूल नाम) (भूः) होना, कार्य करना, भूमि के नीचे (भुवः) ज्ञान प्राप्त करना (स्वाहाः) ब्रह्म की अनुभूति, अंतरिक्ष (तत्) वह (परमात्मा) (सवितु) निर्माता (परमात्मा), सूर्य (वरेण्यम्) वरण करने योग्य (भर्गो) प्रभाव, सर्वोच्च बुद्धि (देवस्य) दिव्य की, चाहने योग्य, प्रकाशित (धीमहि) हम एकाग्र करें और उस पर ध्यान करें (धियो) बुद्धियाँ (यः) जो (नः) हमारे (प्रचोदयात्) प्रेरित करें, उत्तम कार्यों के लिए ।

व्याख्या :-

वह (परमात्मा) धरती के नीचे है; वह वायु मण्डल में है; वह अंतरिक्ष में है। वह हमारा कार्य रूप है और हमारा लक्ष्य है, जो हम प्राप्त करना चाहते हैं; वह उस ज्ञान में है, जो हम अर्जित करना चाहते हैं।

वह निर्माता वरण करने के योग्य है। हम उसके प्रभाव और उस सर्वोच्च दिव्य प्रकाशित और सर्वोच्च बुद्धि पर ध्यान एकाग्र करें और उसी पर ध्यान लगायें।

वह हम सबकी बुद्धियों को उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

यदि सविता को सूर्य माने तो एक वाक्य बनता है:- सूर्य का प्रभाव सर्वत्र विद्यमान, हमारे सभी कार्यों में, ज्ञान में और अनुभूतियों के पथ पर सूर्य वरण करने के योग्य है। हम उस सूर्य के प्रभाव पर अर्थात् सूर्य उदय की प्रातःकालीन किरणों पर ध्यान एकाग्र करें, जिससे हमारी बुद्धि उत्तम कार्यों के लिए प्रेरित हो।

जीवन में सार्थकता:-

गायत्री मन्त्र हमें क्या प्रेरणा देता है?

यह मन्त्र जीवन के तीन मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देता है :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





1. वह (परमात्मा) धरती के नीचे है; वह वायु मण्डल में है; वह अंतरिक्ष में है। वह हमारा कार्य रूप है और हमारा लक्ष्य है, जो हम प्राप्त करना चाहते हैं; वह उस ज्ञान में है, जो हम अर्जित करना चाहते हैं।
2. हम उसके प्रभाव और उस सर्वोच्च दिव्य प्रकाशित और सर्वोच्च बुद्धि पर ध्यान एकाग्र करें और उसी पर ध्यान लगायें क्योंकि वह निर्माता वरण करने के योग्य है।
3. वह हम सबकी बुद्धियों को उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

दि

### यजुर्वेद मन्त्र 11.50

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन ।  
महेरणाय चक्षसे ॥

(आपः) जल, ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ (हिष्ठाः) निश्चित रूप से हैं (मयोभुवः) शान्ति, कल्याण और आनन्द को उत्पन्न करने और देने वाले (ताः) वे (नः) हमें (ऊर्जे) ऊर्जाओं में (शरीर, मन और आत्मा की) (दधातन) हमें धारण करते हैं (महे) शक्तिशाली (रणाय) शक्ति, वैभव (चक्षसे) ब्रह्म का पूर्ण ज्ञान, सभी इन्द्रियों का, अनुभूति की शक्ति।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 10.9.1 और यजुर्वेद 36.14 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में जल का क्या महत्त्व है?

जल जो ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ हैं, निश्चित रूप से शान्ति, कल्याण और आनन्द को उत्पन्न करने वाली और देने वाली हैं। वे हमें ऊर्जाओं में स्थापित करती हैं (शरीर, मन और आत्मा की) जो ब्रह्म के सम्पूर्ण ज्ञान, सभी इन्द्रियों के सम्पूर्ण ज्ञान और अनुभूति की शक्ति से सम्बन्धित शक्तिशाली वैभव है।

जीवन में सार्थकता :-

क्या जल चिकित्सा में सहायक होता है?

जल ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जा किस प्रकार है?

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जल हमारे संकल्पों को किस प्रकार बल प्रदान करता है और हमारी आध्यात्मिक प्रगति में सहायक होता है?

हमारी तीनों स्तरों पर ऊर्जाओं का मुख्य स्रोत और भौतिक तथा आध्यात्मिक पूर्ण विकास का स्रोत जल ही है।

हमारी शारीरिक और मानसिक समस्याओं का इलाज करने के लिए जल चिकित्सा कई प्रकार से की जाती है।

सामान्य तापमान वाले जल को पीना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। यह शरीर को जल से परिपूर्ण रखता है और विजातीय तत्वों को बाहर करता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि सब्जियों आदि में विद्यमान जल तत्व पकाने की प्रक्रिया में कम न हो। अम्लीय जल हमारे शरीर को बुरी तरह से प्रभावित करते हैं।

हमें जल के अनेक चिकित्सा लक्षणों के प्रति चेतन होना चाहिए :- (1) पाचन क्रिया में सहायता करता है, (2) शरीर से मलों के निष्कासन में सहायता करता है, (3) ठंडक देकर प्यास बुझाता है, (4) तनाव मुक्त विश्राम देता है, (5) खॉसी आदि गले की समस्याओं का इलाज करता है, (6) उल्टी करने में सहायक होता है, (7) अग्नि को शान्त करने में सहायक होता है, (8) रक्त संचार में सहायता करता है, (9) ठंडक का प्रभाव पैदा करता है, (10) ऊर्जा को सक्रिय करता है, (11) वजन कम करने में सहायता करता है, (12) जीवाणुओं को मारकर शरीर को कमजोर होने से बचाता है, (13) तापमान को कम करने में सहायता करता है, (14) कठोरता या तनाव को मुलायम करता है, (15) दर्दों आदि को कम करता है, (16) मूत्र की मात्रा को बढ़ाता है, (17) पसीने के निर्माण में सहायता करता है, (18) बर्फीला ठंडा पानी शरीर को सुन्न करने में सहायता करता है, (19) शरीर का संतुलन बनाये रखने में सहायता करता है, (20) अच्छी निद्रा को प्रेरित करता है उदाहरण के लिए गर्म पानी से पैरों को धोने से अच्छी नींद आती है, (21) इसकी भाप श्वसन तन्त्र की समस्याओं को दूर करती है, (22) जोड़ों को गतिशील बनाने में सहायता करता है।

ब्रह्माण्ड की ऊर्जा सबसे अधिक शक्तिशाली है। ब्रह्माण्ड की ऊर्जा प्रत्येक कोशिका में और सबसे छोटे कण में भी विद्यमान है। क्योंकि धरती पर जल की मात्रा 70 प्रतिशत है, स्वाभाविक रूप से, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का वही अनुपात जल में भी विद्यमान है। इसलिए इसे ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जा कहते हैं।

यदि हम जल के प्रति अपनी चेतना बढ़ा लें तो निश्चित रूप से हम अपने शरीर, अपने मन और आत्मा सबकी शक्तियों को बढ़ा सकते हैं।

जल की स्मृति होती है। इसलिए धार्मिक क्रियाओं में या एक नियमित दिनचर्या की तरह अपने संकल्पों और प्रार्थनाओं को जल के समक्ष समर्पित करना चाहिए। इसीलिए जल पर उपवास को आध्यात्मिक प्रगति के लिए लाभकारी माना जाता है, क्योंकि इससे हमारे संकल्प और प्रार्थनाएँ बलशाली होते हैं। स्नान करते समय, जल पीते समय और अन्य लोगों को जल उपलब्ध कराते समय इस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए।

**यजुर्वेद मन्त्र 11.51**

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
 Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
 For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



### Yajur Veda 11.51

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।  
उशतीरिव मातरः ॥

(यः) वह (वः) आपका (शिवतमः) आनन्ददायक, सबका कल्याण करने वाला (रसः) तरल, ऊर्जाओं का निचोड़ (तस्य) उसका (भाजयत्) भाग (इह) यहाँ, इस जीवन में (नः) हमारे लिए (उशतीः) प्रेम करने वाला, आकर्षण (इव) जैसे कि (मातरः) माताएँ ।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 10.9.2 तथा 36.15 में समान रूप से आया है ।

व्याख्या :-

जल की दिव्यता क्या है?

जल की तुलना माँ के दूध से क्यों की जाती है?

इस सूक्त के देवता 'आपः' अर्थात् जल से प्रार्थना की गई है ।

आपके आनन्ददायक तरल अर्थात् जल, ब्रह्माण्डीय ऊर्जाओं का निचोड़, सबके लिए आनन्ददायक है और सबका कल्याण करता है । अतः अपनी तरल ऊर्जा को हमारे साथ यहाँ, इसी जीवन में, बाँटें जिस प्रकार एक प्रेम करती हुई माँ अपनी तरल ऊर्जा अर्थात् छाती के दूध को अपने बच्चे के साथ बाँटती है ।

जीवन में सार्थकता :-

हमें जल का प्रयोग कैसे करना चाहिए?

जल की तुलना माँ के दूध से की गई है जो जन्म के बाद बच्चे को दी जाने वाली पहली ऊर्जा है । जल को भी ब्रह्माण्डीय ऊर्जाओं के निचोड़ का मुख्य तत्त्व समझना चाहिए । जल सभी जीवों के अच्छे स्वास्थ्य और रोगों के इलाज के लिए आनन्ददायक है । इसे दिव्यताओं का निचोड़ समझकर वैसे ही पीना चाहिए जैसे माँ के दूध को पिया जाता है, धीरे-धीरे एक-एक घूंट करके उसके साथ मुँह में पैदा होने वाली लार को मिलाकर । जल पीते समय हमें इसकी दिव्य शक्तियों के प्रति चेतन रहना चाहिए ।

### यजुर्वेद मन्त्र 11.52

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।  
आपो जनयथा च नः ॥

(तस्मा) उसके लिए (ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जा के लिए) (अरम् गमाम) हम बिना देरी के आते हैं, हम समुचित प्रयास करते हैं (वः) आपके (यस्य) जिसके लिए (क्षयाय) आवास या उत्पादन (जिन्वथ) हमें प्रेरित करो, हमें

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



उत्तेजित करो (आपः) जल (जनयथा) हमें ताकत और जीवनी शक्ति प्रदान करो, उत्पादन करने का बल (च) और (नः) हमें।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 10.9.3 और यजुर्वेद 36.16 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

हमें जल की आवश्यकता क्यों होती है?

आपकी ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाओं अर्थात् जल के लिए हम बिना देरी के आपके निकट आते हैं, हम समुचित प्रयास करते हैं, जिसके आवास या उत्पादन के लिए आप हमें प्रेरित करते हो और उत्तेजित करते हो। जल हमें ताकत, जीवनी शक्ति और उत्पादन का बल प्रदान करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

जल हमें उत्पादन का बल किस प्रकार प्रदान करते हैं?

सभी खाद्य पदार्थों के आवास और उत्पादन के लिए हमें जल की आवश्यकता होती है जैसे – अनाज, फल और सब्जियाँ आदि। क्योंकि सभी प्राणियों को ताकत और जीवनी शक्ति प्रदान करने के लिए हमें खाद्य पदार्थों को पैदा करने की प्रेरणा दी गई और उत्तेजित किया गया। जल हमारे अस्तित्व अर्थात् हमारे पालन-पोषण और शक्ति संग्रहण के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। बिना जल के कुछ भी पैदा नहीं किया जा सकता।

जल हमें पैदा करने का बल देता है। जैसे – जल अनउपजाऊ भूमि को भी खाद्य पदार्थ पैदा करने के योग्य बना देता है। 'जनयथा' शब्द बच्चे पैदा न होने के उपचार का संकेत करता है। जो लोग, पुरुष या स्त्री, बच्चे पैदा करने में सक्षम नहीं हैं उन्हें नियमित रूप से इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए अधिक मात्रा में जल को औषधि की तरह पीना चाहिए।

यहाँ यह कहना असंगत नहीं होगा कि जीवों के अस्तित्व के लिए 5 तत्वों में से प्रत्येक तत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह सूक्त जल के महत्व को उजागर करता है। क्योंकि इसका देवता अर्थात् दिव्य शक्ति 'आपः' अर्थात् जल है।

यजुर्वेद मन्त्र 15.48

Yajurveda 15.48

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरुथ्यः।

वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः।

तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (त्वम्) आप (नः) हमारे (अन्तमः) गहरे आन्तरिक (अन्दर का सब कुछ जानते हुए) (उत) और (त्राता) संरक्षक, बचाव करने वाला (शिवः) कल्याण करने वाला (भवा) हो (वरुथ्यः) सर्वोत्तम आवरण। (वसुः) सबका आवास (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (वसु) सबका आवास (श्रवा) श्रवण शक्ति (अच्छा) उत्तम (नक्षि) सर्वत्र विद्यमान (द्युमत्तमम्) प्रकाश के साथ संयुक्त (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा (दाः) प्रदान करो। (तम्) वह (त्वा) आपको (शोचिष्ठ) अत्यन्त शुद्ध (दीदिवः) दिव्यता के स्वप्रकाशित प्रकाश का देने वाला (सुम्नाय) सुखों और प्रसन्नताओं के लिए (नूनम्) निश्चित रूप से (ईमहे) प्रार्थना (सखिभ्यः) श्रेष्ठ मित्रों के लिए।

नोट :- इस मन्त्र में ऋग्वेद 5.24.1, 2 और 4 को संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया गया है। ऋग्वेद सूक्त 5.24 के चारों मन्त्रों को उचित प्रकार से समझने के लिए कृपया यजुर्वेद 3.25 और 26 को देखें।

व्याख्या :-

हमारा गहरा आन्तरिक सहभागी कौन है?

वह, 'अग्नि' हमारे लिए क्या कर सकता है?

दिव्यता के स्वप्रकाशित प्रकाश का दाता और पूरी तरह से शुद्ध कौन है?

हे सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप हमारे गहरे आन्तरिक हो जो अन्दर से हमारा सबकुछ जानते हो और सभी सुविधाओं में हमारे संरक्षक बनकर हमारा बचाव करते हो। कृपया हमारे कल्याण के लिए हमारे सर्वोत्तम आवरण बन जाओ।

आप ऊर्जा के रूप में सर्वत्र विद्यमान हो। आप श्रवण शक्ति के रूप में विद्यमान हो जिससे हम आपको सुन सकें। आप सर्वत्र उत्तम प्रकार से विद्यमान हो। कृपया हमें प्रकाश से संयुक्त गौरवशाली सम्पदा प्रदान करो। हम अपने श्रेष्ठ मित्रों के लिए सभी सुखों, प्रसन्नताओं की प्रार्थना उस आपसे करते हैं जो पूरी तरह से शुद्ध और दिव्यताओं के स्वप्रकाशित प्रकाश का दाता है।

सूक्ति 1 :-

(अग्ने त्वम् नः अन्तमः उत त्राता । ऋग्वेद 5.24.1, यजुर्वेद 15.48, सामवेद 448, 1107)

हे सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप हमारे गहरे आन्तरिक हो जो अन्दर से हमारा सबकुछ जानते हो और सभी सुविधाओं में हमारे संरक्षक बनकर हमारा बचाव करते हो।

सूक्ति 2:-

(शिवः भवा वरुथ्यः । ऋग्वेद 5.24.1, यजुर्वेद 15.48, सामवेद 448, 1107)

कृपया हमारे कल्याण के लिए हमारे सर्वोत्तम आवरण बन जाओ।

सूक्ति 3:-

(वसुः अग्निः वसु श्रवा । ऋग्वेद 5.24.2, यजुर्वेद 3.25, 15.48, सामवेद 1108)

आप ऊर्जा के रूप में सर्वत्र विद्यमान हो। आप श्रवण शक्ति के रूप में विद्यमान हो जिससे हम आपको सुन सकें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



## यजुर्वेद 17.27

यो नः पिता जनिता यो उत बन्धुर्धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।  
यो देवानां नामधा एक एव तं संप्रश्नं भुवना यन्ति अन्या ॥27॥

(यः) जो (परमात्मा) (नः) हमारा (पिता) स्वामी, रक्षक (जनिता) पैदा करने वाला (यः) जो (परमात्मा) (उत) और (बन्धुः) भाई, बांधने की शक्ति (उसके ऊपर बन्धन) (धामानि) स्थान, अवस्थाएँ, गन्तव्य (वेद) जानता है (भुवनानि) स्थानों और जीवों को (विश्वा) सब (यः) जो (देवानाम्) दिव्य का (शक्तियाँ और लोग, ऋषि और देवता) (नामधाः) नामों को समझता है (एकः एव) केवल एक (तम्) उसको (संप्रश्नम्) उचित प्रश्न, सभी प्रश्नों, जिज्ञासाओं, खोज और ध्यान साधना का लक्ष्य (भुवना) अस्तित्वमय संसार (यन्ति) प्राप्त होते हैं (अन्या) अन्य ।

नोट :- यह मन्त्र अथर्ववेद 2.1.3 तथा ऋग्वेद 10.82.3 और यजुर्वेद 17.27 में छोटे-छोटे परिवर्तनों के साथ लगभग समान है। ऋग्वेद और यजुर्वेद में – (1) 'सः' के स्थान पर 'योः' आया है। 'योः' का अर्थ है जो (परमात्मा), (2) 'नामधः' के स्थान पर 'नामधाः' आया है। (3) 'सर्वा' के स्थान पर 'अन्या' आया है। 'अन्या' का अर्थ है अन्य ।

व्याख्या :-

सभी दिव्यताएँ और जिज्ञासाएँ कहाँ पर एकीकृत हो जाती हैं?

जो (परमात्मा) हमें पैदा करता है, स्वामी और रक्षक है;

जो हमारा भाई है अर्थात् बांधने की शक्ति (उसके ऊपर बन्धन);

जो सभी स्थानों, अवस्थाओं और गन्तव्यों तथा सभी जीवों को जानता है;

जो केवल एक ही है जो सभी दिव्य (शक्तियों और लोगों, ऋषियों और देवताओं) के नामों को समझता है ।

अन्य उचित प्रश्न, जिज्ञासाएँ, खोज और ध्यान-साधनाएँ तथा अस्तित्व वाला पूरा संसार उसी में पहुँच जाते हैं ।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमारा प्रत्येक सम्बन्ध और हमारी प्रत्येक देखभाल करने वाला कौन है?

परमात्मा का महिमागान करते हुए संस्कृत में एक गान है – त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव । इसी मन्त्र के आधार पर निर्मित प्रतीत होती है ।

सभी दिव्यताएँ और सभी जिज्ञासाएँ उसी का रूप ले लेती हैं। इसीलिए एक वास्तविक श्रद्धालु उसकी सर्वोच्चता और बुद्धिमत्ता के प्रति सदैव सचेत रहता है। वह हम सब मानवों के लिए सत्य और सब कुछ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



है। उसकी बन्धुता और देखभाल आदि को महसूस करते हुए और विश्वास करते हुए कोई भी व्यक्ति किसी भी अवस्था के कारण कभी भी मानसिक असंतुलन महसूस नहीं करेगा।

सूक्ति :- 1. (सः वेद भुवनानि विश्वा – अथर्ववेद 2.1.3, ऋग्वेद 10.82.3 तथा यजुर्वेद 17.27) वह सभी स्थानों, अवस्थाओं और गन्तव्यों तथा सभी जीवों को जानता है;

2. (यः देवानाम् नामधः एकः एव – अथर्ववेद 2.1.3, ऋग्वेद 10.82.3 तथा यजुर्वेद 17.27) वह केवल एक ही है जो सभी दिव्य (शक्तियों और लोगों, ऋषियों और देवताओं) के नामों को समझता है।

3. (तम् संप्रश्नम् भुवना यन्ति सर्वा – अथर्ववेद 2.1.3, ऋग्वेद 10.82.3 तथा यजुर्वेद 17.27) सभी उचित प्रश्न, जिज्ञासाएँ, खोज और ध्यान-साधनाएँ तथा अस्तित्व वाला पूरा संसार उसी में पहुँच जाते हैं।

### यजुर्वेद मन्त्र 19.4

पुनाति ते परिस्सुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता।  
वारेण शश्वता तना।।

(पुनाति) पवित्र करने वाला (ते) आपके (परिस्सुतम्) सभी दिशाओं से प्राप्त होने योग्य (सोमम्) शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और जड़ी-बुटियों का (सूर्यस्य) सूर्य का (दुहिता) सुपुत्री (ऊषा, सूर्योदय की प्रथम किरणें) (वारेण) प्राप्त होने योग्य (शश्वता) सदैव रहने वाला, बिना बाधा के (तना) विशाल फैला हुआ।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 9.1.6 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

सोम किस प्रकार पवित्र होते हैं?

शाश्वत अर्थात् बिना बाधा के सदा रहने वाली विशाल फैली हुई (ताप, प्रकाश, ऊर्जा और प्राण) जो सूर्य की पुत्री अर्थात् ऊषा, प्रातःकाल की प्रथम किरणों के रूप में प्राप्त करने योग्य है, सभी दिशाओं से प्राप्त होती है और आपके सोम लक्षणों को पवित्र करती है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ब्रह्म बेला अर्थात् ऊषा किस प्रकार मानव मस्तिष्क और व्यवहार पर प्रभाव डालती है? शुभ गुण, दिव्य ज्ञान और जड़ी-बुटियाँ भी ब्रह्म बेला अर्थात् सूर्योदय से पूर्व जागने वाले लोगों के जीवन में शुद्ध और बलशाली हो जाती है। ऋग्वेद के सूक्त 1.48 और 49, 1.123, 1.124, 3.61, 4.30, 4.51, 4.52, 5.79, 5.80, 6.64, 6.65, 7.75 से 7.81 तक तथा 10.172 आदि विशेष रूप से सूर्योदय से पूर्व अर्थात् ऊषाकाल में उठने के लिए प्रेरित करते हैं। इस समय को ब्रह्म बेला कहा जाता है, क्योंकि यह समय हमारे अन्दर पवित्र आध्यात्मिक विचारों को पैदा करता है जो हमें सर्वोच्च ब्रह्म, परमात्मा, के ज्ञान के निकट ले आते हैं। प्रातः जागृत होने वाले लोग प्राकृतिक रूप से मन में और व्यवहार में शुभ लक्षण, दिव्य ज्ञान प्राप्त करने लगते हैं।

### यजुर्वेद 19.44

वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बहव्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः ।  
तया मदन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।। 2 ।।

(वैश्व देवी) सर्वोच्च दिव्य ज्ञान, इस सृष्टि की मातृशक्ति (पुनती) शुद्ध करते हुए (देवी) सर्वोच्च दिव्य ज्ञान, इस सृष्टि की मातृशक्ति (आगात्) हमारे द्वारा प्राप्त हो (यस्याम्) जिसके द्वारा (इमाः) ये (बहव्याः) असंख्य (तन्वः) सर्वत्र फैली हुई (वीतपृष्ठाः) भिन्न-भिन्न और गहरे ज्ञान (तया) उससे (मदन्तः) आनन्दित और प्रफुल्लित महसूस करना (सधमादेषु) समान रूप से हमारे स्थान पर (वयम्) हम (स्याम्) हों (पतयः) स्वामी और संरक्षक (रयीणाम्) गौरवशाली सम्पदा के।

नोटः— अथर्ववेद 6.62.2 तथा यजुर्वेद 19.44 के कुछ भाग समान हैं।

व्याख्याः—

हमें हमारे स्थान पर कौन शुद्ध करता है?

सर्वोच्च दिव्य ज्ञान, इस सृष्टि की मातृशक्ति उस ज्ञान को धारण करते हुए और सबको शुद्ध करते हुए हमें दिव्य ज्ञान तथा दिव्य कन्याओं की तरह प्राप्त हो जिससे चारों तरफ फैले हुए असंख्य और भिन्न-भिन्न गहरे ज्ञान हमारे पास आये। उस आनन्ददायक और प्रफुल्लित उपलब्धि के साथ हम अपने स्थान पर समान रूप से गौरवशाली सम्पदा के स्वामी और संरक्षक बनें।

जीवन में सार्थकताः—

‘देवी’ के दोनों आयामों अर्थात् दिव्य ज्ञान और मातृ शक्ति के, क्या लाभ हैं?

दिव्य ज्ञान के क्या लक्षण हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





दिव्य ज्ञान और मातृ शक्ति को पर्यायवाची के रूप में 'देवी' शब्द की व्याख्या के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह दोनों परमात्मा के कार्यरूप हैं। दोनों से हमें एक विनम्र सम्बद्धता के निम्न फल प्राप्त होते हैं :-

1. दोनों शुद्ध करने वाली हैं,
  2. दोनों विभिन्नताओं से भरे हुए गहरे ज्ञान के द्वार खोलती हैं,
  3. दोनों आनन्द और प्रफुल्लता की स्रोत हैं,
  4. दोनों गौरवशाली सम्पदा अर्थात् भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक सम्पदा, का कारण हैं।
- परमात्मा का दिव्य ज्ञान मानवता के पूर्ण कल्याण के लिए हर प्रकार के ज्ञान को समाहित करता है। यह पवित्र और सकारात्मक ज्ञान है जिसमें जरा भी नकारात्मकता और विनाश का मार्ग नहीं है। यह ज्ञान यज्ञ के लिए है अर्थात् धरती पर रहने वाले सभी जीवों के कल्याण के लिए। यह दिव्य है, क्योंकि यह हमें दिव्य शक्तियों और दिव्य लोगों और अन्ततः परमात्मा के साथ जोड़ता है। यह दिव्य है क्योंकि यह वायुमण्डल में व्याप्त है और सभी जिज्ञासुओं को बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध होता है। यह दिव्य है क्योंकि यह परमात्मा द्वारा दिया गया है जो सभी मनुष्यों के कल्याण के लिए स्वयं ही यह पवित्र ज्ञान है। इसीलिए उसे वैश्वानर कहा जाता है। इस ज्ञान को प्राप्त करने की एक ही शर्त है – पवित्रता, क्योंकि शुद्ध होने के नाते यह केवल पवित्र लोगों के पास ही आता है।

सूक्ति :- 1. (वैश्व देवी पुनती देवी आगात् – अथर्ववेद 6.62.2, तथा यजुर्वेद 19.44) सर्वोच्च दिव्य ज्ञान, इस सृष्टि की मातृशक्ति उस ज्ञान को धारण करते हुए और सबको शुद्ध करते हुए हमें प्राप्त हो।  
2. (वयम् स्याम पतयः रयीणाम् – अथर्ववेद 6.62.2, यजुर्वेद 19.44 तथा ऋग्वेद 10.121.10) हम गौरवशाली सम्पदा के स्वामी और संरक्षक हों।

**यजुर्वेद मन्त्र 19.64**

**Yajurveda 19.64**

यमग्ने कव्यवाहन त्वं चिन्मन्यसे रयिम्।  
तं नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम्॥

(यम) जिसको (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (कव्यवाहन) दिव्य ज्ञान का धारण करने वाला (त्वम्) आप (चित्) भी (मन्यसे) जानता है (रयिम्) महिमावान् सम्पदा (तम्) उसको (नः) हमें (गीर्भिः) वैदिक वाणियाँ (श्रवाय्यम्) सुनने योग्य (देवत्रा) दिव्यताओं के बारे में (पनया) उपलब्ध कराता है (युजम्) संयुक्त करता है।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



नोट :- यह मन्त्र एक शब्द के परिवर्तन के साथ ऋग्वेद 5.20.1 में है। इस मन्त्र में प्रयुक्त 'कव्यवाहन' के स्थान पर ऋग्वेद 5.20.1 में 'वाजसातम' का प्रयुक्त है। 'वाजसातम' का अर्थ है – उत्तम सम्पदा, शक्ति और बल का देने वाला।

व्याख्या :-

'अग्नि', दिव्य ऊर्जा से हम क्या चाहते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य, उत्तम सम्पदा, शक्तियों और बलों का देने वाला, दिव्य ज्ञान और वैदिक वाणियों की महिमावान् सम्पदा के बारे में आप जो कुछ भी जानते हो, जो सभी दिव्यताओं के बारे में सुनने योग्य है, कृपया उसे अपने साथ हमारी संगति के लिए उपलब्ध कराओ।

जीवन में सार्थकता :-

हम एक शुद्ध साधक किस प्रकार बन सकते हैं?

केवल दिव्य शक्तियाँ ही हमें दिव्यता प्रदान कर सकती हैं। इसके लिए एक ही शर्त है कि हम पथ भ्रमित हुए बिना दिव्यताओं को प्राप्त करने के लिए स्वयं को उस लक्ष्य का एक शुद्ध साधक बनाने के लिए कड़ी मेहनत और प्रयास करें। कोई व्यक्ति केवल और केवल सर्वोच्च शक्ति के प्रति पूर्ण श्रद्धा के साथ ही शुद्ध साधक बन सकता है।

**यजुर्वेद मन्त्र 19.69**

**Yajurveda 19.69**

अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न ऋतमाशुषाणाः।

शुचीदयन्दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप व्रन् ।।

(अधा) इस प्रकार (यथा) जैसे कि (नः) हमारे (पितरः) पूर्वज, दिव्य विद्वान्, परमात्मा (परासः) सर्वोत्तम (प्रत्नासः) प्राचीन (आयु में, ज्ञान में, कार्यों में) (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (ऋतम्) सम्पूर्ण सत्य (आशुषाणाः) अच्छी तरह से प्राप्त, अनुभूति (शुची) शुद्धता (इत् अयन्) किरणें (दीधितिम्) ज्ञान का प्रकाश (उक्थ शासः) योग्य ज्ञान को प्रदान करना (क्षामा) सांसारिक, भौतिक, अन्धकार का आवरण (भिन्दन्तः) तोड़ते हुए (अरुणीः) सूर्योदय का प्रकाश (अप व्रन्) खुला हुआ, बिना ढका हुआ।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 4.2.16 में समान रूप से है।

व्याख्या :-

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
 Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
 For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमारे पूर्वज चेतना में कितने उच्च थे?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! कृपया हमारे पूर्वजों, सर्वोत्तम और प्राचीन (आयु में, ज्ञान में और कार्यों में) जो सम्पूर्ण सत्य, शुद्धता को प्राप्त करने के लिए तथा उसकी अनुभूति के लिए समर्पित थे और जिन्होंने योग्य ज्ञान के प्रकाश की किरणों का प्रसार किया और जिन्होंने सांसारिक, भौतिक और अन्धकार के आवरण को तोड़ा और जिन्होंने सूर्योदय के प्रकाश को खोला अर्थात् आवरण रहित किया, उनकी तरह हमें शुद्ध करो और ज्ञानवान बनाओ।

जीवन में सार्थकता :-

हम अपने पूर्वजों की तुलना परमात्मा से क्यों करते हैं?

हम अपने पूर्वजों की तुलना परमात्मा से इसलिए करते हैं क्योंकि वे कार्यों में और मन में शुद्ध हैं। उन्होंने उच्च चेतना का जीवन बिताया। उन्होंने परमात्मा की सर्वोच्च वास्तविकता को जाना और उसकी अनुभूति की।

इसके अतिरिक्त वे निश्चित रूप से आध्यात्मिक बल की एक दिव्य श्रृंखला हैं जो सृष्टि उत्पत्ति के समय से परमात्मा से प्रकट हुई थी।

**यजुर्वेद मन्त्र 19.71**

**Yajur Veda 19.71**

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः।

विश्वा यदजयः स्पृधः॥

(अपाम्) जलों का, कर्मों का, समुद्र की झाग का (फेनेन) बढ़ने के साथ (नमुचेः) त्याग नहीं करता (अहंकार का) (शिरः) सिर की तरफ (इन्द्रः) सूर्य, इन्द्रियों का नियंत्रक (उदवर्तयः) गर्व से बढ़ना (बादलों, कर्मों का नाश करते हुए) (विश्वा) सब (यत्) जो (अजयः) जीत (स्पृधः) प्रतियोगी, शत्रु आदि।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 8.14.13 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

सभी शत्रुओं को नष्ट या छोटा कैसे करें?

इस मन्त्र का देवता 'इन्द्र' है।

'इन्द्र' अर्थात् सूर्य गर्व के साथ आगे बढ़ता है। उन जलों के सिर को नष्ट करने के लिए, छोटा करने के लिए जो अपने उदय होने अर्थात् बादलों या समुद्र की झाग का त्याग नहीं करते।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



‘इन्द्र’ अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक, गर्व के साथ आगे बढ़ता है। अपने अहंकार और बढ़ते हुए कर्मों के साथ जुड़ी इच्छाओं को नष्ट करने के लिए या छोटा करने के लिए। केवल इसी प्रकार हम अपने सभी प्रतियोगियों और शत्रुओं आदि पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हमें इन्द्र क्यों बनना चाहिए?

हम इन्द्र कैसे बनें?

प्रत्येक व्यक्ति को इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक अवश्य ही बनना चाहिए। अन्यथा, सम्पूर्ण जीवन इन्द्रियों के तुष्टिकरण में ही व्यर्थ हो जायेगा। परमात्मा की अनुभूति या मुक्ति आदि की तो बात ही क्या करनी या विचार ही क्या करना, इन्द्र बनें बिना तो कोई व्यक्ति भौतिक, सांसारिक मार्ग पर भी शान्त जीवन नहीं जी सकता।

इन्द्र बनने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को एक समान विचार श्रृंखला अपनानी चाहिए कि मन का कार्य है अपने लक्ष्य तक पहुँचने के मार्ग को साफ करना न कि इन्द्रियों के पीछे भागते हुए मार्गों पर भटक जाना। बल्कि मन को शरीर रथ की सहायता करते हुए अपने गन्तव्य तक पहुँचने के लिए सभी इन्द्रियों को इस कार्य में नियुक्त करना चाहिए। मन को इन्द्रियों के नियंत्रण में नहीं रहना चाहिए। बल्कि मन को सभी इन्द्रियों के ऊपर प्रभावशाली नियंत्रण रखना चाहिए।

### यजुर्वेद 30.2

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।  
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ऋग्वेद 3.62.10, यजुर्वेद 3.35, 30.2, 36.3, सामवेद 1462

(ओ३म्) ब्रह्माण्ड की ध्वनि जो सर्वत्र तरंगित है (परमात्मा का मूल नाम) (भूः) होना, कार्य करना, भूमि के नीचे (भुवः) ज्ञान प्राप्त करना (स्वाहाः) ब्रह्म की अनुभूति, अंतरिक्ष (तत्) वह (परमात्मा) (सवितु) निर्माता (परमात्मा), सूर्य (वरेण्यम्) वरण करने योग्य (भर्गो) प्रभाव, सर्वोच्च बुद्धि (देवस्य) दिव्य की, चाहने योग्य, प्रकाशित (धीमहि) हम एकाग्र करें और उस पर ध्यान करें (धियो) बुद्धियाँ (यः) जो (नः) हमारे (प्रचोदयात्) प्रेरित करें, उत्तम कार्यों के लिए ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





व्याख्या :-

वह (परमात्मा) धरती के नीचे है; वह वायु मण्डल में है; वह अंतरिक्ष में है। वह हमारा कार्य रूप है और हमारा लक्ष्य है, जो हम प्राप्त करना चाहते हैं; वह उस ज्ञान में है, जो हम अर्जित करना चाहते हैं।

वह निर्माता वरण करने के योग्य है। हम उसके प्रभाव और उस सर्वोच्च दिव्य प्रकाशित और सर्वोच्च बुद्धि पर ध्यान एकाग्र करें और उसी पर ध्यान लगायें।

वह हम सबकी बुद्धियों को उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

यदि सविता को सूर्य माने तो एक वाक्य बनता है:- सूर्य का प्रभाव सर्वत्र विद्यमान, हमारे सभी कार्यों में, ज्ञान में और अनुभूतियों के पथ पर सूर्य वरण करने के योग्य है। हम उस सूर्य के प्रभाव पर अर्थात् सूर्य उदय की प्रातःकालीन किरणों पर ध्यान एकाग्र करें, जिससे हमारी बुद्धि उत्तम कार्यों के लिए प्रेरित हो।

जीवन में सार्थकता:-

गायत्री मन्त्र हमें क्या प्रेरणा देता है?

यह मन्त्र जीवन के तीन मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देता है :-

1. वह (परमात्मा) धरती के नीचे है; वह वायु मण्डल में है; वह अंतरिक्ष में है। वह हमारा कार्य रूप है और हमारा लक्ष्य है, जो हम प्राप्त करना चाहते हैं; वह उस ज्ञान में है, जो हम अर्जित करना चाहते हैं।
2. हम उसके प्रभाव और उस सर्वोच्च दिव्य प्रकाशित और सर्वोच्च बुद्धि पर ध्यान एकाग्र करें और उसी पर ध्यान लगायें क्योंकि वह निर्माता वरण करने के योग्य है।
3. वह हम सबकी बुद्धियों को उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

ओम्

यजुर्वेद 34.34  
प्रातःकालीन प्रार्थनाएँ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।  
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ॥३४॥

(प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (अग्निम्) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रथम अग्रणी, अग्नि, ताप, ऊर्जावान, बुद्धिमान (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक को (हवामहे) हम बुलाते हैं, आह्वान करते हैं (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (मित्रा) मित्र (वरुणा) शासक (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (अश्विना) जोड़ा (दिव्य शक्तियों का, सूर्य और चन्द्रमा का, अग्नि और जल का, गुरु और शिष्य का, प्राणों का) (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (भगम्) सुखों, वैभव और महिमा आदि के दाता को (पूषणम्) पोषण करने वाले को (ब्रह्मणः पतिम्) परमात्मा और इस सृष्टि के ज्ञान के सर्वोच्च स्वामी और संरक्षक को (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (सोमम्) शुभ गुणों और दिव्य ज्ञान को (उत) और (रुद्रम्) रुद्र को, न्याय का स्वामी जो सभी बुराईयों को रोकने के लिए मजबूर करके उन पर नियंत्रण करता है (हुवेम्) प्रशंसा, महिमागान ।

नोट: यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.1 केवल एक शब्द के अन्तर के साथ ऋग्वेद 7.41.1 तथा यजुर्वेद 34.34 के समान है। ऋग्वेद 7.41.1 तथा यजुर्वेद 34.34 में अन्तिम शब्द 'हुवेम' आया है जिसका अर्थ है प्रशंसा करना और महिमागान करना ।

व्याख्या:-

प्रातःकाल सूर्योदय के समय किन दिव्य शक्तियों की प्रशंसा और उनका आह्वान किया जाना चाहिए? प्रातःकाल सूर्योदय के समय मैं सर्वोच्च ऊर्जा के स्रोत तथा सर्वोच्च नियंत्रक को बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ। मैं परमात्मा को अपने मित्र की तरह आह्वान करता हूँ; अपने शासक की तरह; जोड़े की तरह (दिव्य शक्तियों का, सूर्य और चन्द्रमा का, अग्नि और जल का, गुरु और शिष्य का, परमात्मा और इस सृष्टि के ज्ञान के सर्वोच्च स्वामी और संरक्षक को); सभी सुखों, वैभव और महिमा देने वाले की तरह; पोषक तत्वों की तरह; इस सृष्टि के सर्वोच्च स्वामी और संरक्षक की तरह; शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान, सम्पदा और औषधियों की तरह; रुद्र की तरह, न्याय का स्वामी जो सभी बुराईयों को रोकने के लिए मजबूर करके उन पर नियंत्रण करता है। मैं परमात्मा के इन सभी आयामों की प्रशंसा और महिमागान करता हूँ।

जीवन में सार्थकता:-

हम दिव्यताओं के साथ कैसे जुड़ सकते हैं?

हमें इस मन्त्र का स्वाध्याय ऋग्वेद के 1.48 और 1.49 सूक्तों के साथ मिलाकर करना चाहिए, जो ऊषाकाल अर्थात् ब्रह्मवेला पर चर्चा करते हैं। इन सभी सूक्तों का संयुक्त अभ्यास निश्चित रूप से हमारी प्रातःवेला अर्थात् दिन के प्रारम्भ को दिव्यताओं से भर देगा ।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



यह मन्त्र सर्वोच्च ऊर्जा, सर्वोच्च नियंत्रक और सर्वोच्च स्वामी का आह्वान उसकी दिव्यताओं के साथ करता है, जो शक्तियाँ उसने भिन्न-भिन्न दिव्य शक्तियों को प्रदान की है। प्रतिदिन प्रातःकालीन वेला में नियमित रूप से इस सारे चिन्तन और प्रार्थनाओं के साथ हम इन दिव्यताओं के साथ सम्बद्धता महसूस कर सकते हैं।

### यजुर्वेद 34.35

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।  
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥35॥

(प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (जितम्) जीतने के योग्य (भगम्) सभी सुखों, वैभव और महिमा के देने वाले को (उग्रम्) चमक (हुवेम) प्रशंसा, महिमागान (वयम्) हम (पुत्रम्) पुत्रों के समान (अदितेः) अनाशवान और असीम माँ का, सनातन शक्ति (यः) जो (विधर्ता) सभी ब्रह्माण्डीय शरीरों को धारण करने वाला (आध्रः चित्) सबके द्वारा धारण किया गया, सब दिशाओं से (यम्) जिसे (मन्यमानः) जानते हुए, चिन्तन करते हुए (तुरः) शक्तिशाली वाणी (चित्) निश्चित रूप से (राजा) राजा (चित्) भी (यम्) जिसे (भगम्) सुखों, वैभव और महिमा आदि के दाता को (भक्षि) सेवा और प्रशंसा (इति) इस प्रकार (आह) बोलना, उपदेश देना।

नोट: यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.2 केवल एक शब्द के अन्तर के साथ ऋग्वेद 7.41.2 तथा यजुर्वेद 34.35 के समान है। ऋग्वेद 7.41.2 तथा यजुर्वेद 34.35 में 'हवामहे' के स्थान पर 'हुवेम' शब्द का प्रयोग हुआ है। जिसका अर्थ है प्रशंसा करना और महिमागान करना।

व्याख्या:-

क्या हमें सुखों की प्रार्थना करने का अधिकार है?

प्रातःकालीन वेला में अर्थात् सूर्योदय के समय हम चमक वाले सुखों, वैभव और महिमा को देने वाले को बुलाते हैं, आह्वान करते हैं, उसकी प्रशंसा और महिमागान करते हैं कि वह हमें जीतने योग्य सुखों को प्रदान करे क्योंकि हम उस अनाशवान और असीम माता के पुत्र हैं, सनातन शक्ति के पुत्र हैं जिसने सभी आकशीय शरीरों को धारण कर रखा है; जिसे सब लोग सब तरफ से धारण करते हैं; जिसे सब लोग जानते हैं और उस पर चिन्तन करते हैं, और जो निश्चित रूप से सभी लोगों और राजाओं की भी वाणी है। सुखों और वैभव के उस सर्वोच्च दाता की सेवा करो और प्रशंसा करो। अपनी प्रार्थनाएँ इसी प्रकार से बोलो और उपदेश करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता:-

इस सृष्टि का क्या उद्देश्य है?

मानवतावादी जीवन का क्या उद्देश्य है?

परमात्मा ने अनेकों निर्देशों और विचारों के साथ इस सृष्टि का निर्माण निश्चित रूप से सभी जीवों के भोग के लिए किया है। सृष्टि का भोग हमारा अधिकार है, क्योंकि हम सृष्टि निर्माता के पुत्र और पुत्रियों की तरह हैं, किन्तु यह भोगने और संग्रहण करने का कार्य हमारे जीवन का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। भोग को न्यूनतम सीमा में रखना चाहिए। जीवन का प्रधान उद्देश्य तो सब सुखों के दाता के साथ एक नियमित सम्बद्धता बनाये रखना होना चाहिए।

उसके अनुदानों को प्राप्त करने के लिए हमें यह सिद्ध करना होगा कि हम उन्हें प्राप्त करने के लिए योग्य और सक्षम हैं। यह योग्यता और सक्षमता एक राता की तरह शक्तिशाली और गतिशील कार्यों को करने से आती है। जैसे सबके कल्याण के लिए यज्ञ करने वाला करता है। इस प्रकार निःसंदेह सृष्टि का उद्देश्य भोग करना है, परन्तु इसकी योग्यता और सक्षमता केवल यज्ञ करने वाले के लिए है। क्योंकि केवल वही व्यक्ति अनुदानों का उत्तम और समान वितरण सुनिश्चित कर सकता है।

### यजुर्वेद 34.36

भग प्रणेत्तर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।  
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥३॥

(भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (प्रणेत्त) हमें उत्तम मार्ग की प्रेरणा देता है और उपलब्ध कराता है (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (सत्य राधः) सत्य की सम्पदा, सत्य सम्पदा अर्थात् परमात्मा का ज्ञान (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (इमाम्) यह प्रशंसनीय (धियम्) बुद्धि, विवेक (उत् अव) प्रगतिशील (ददत्) देते हुए (नः) हमें (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (प्र) सर्वोत्तम (नः) हमें (जनय) उत्पन्न करता है (गोभिः) गऊओं से, ज्ञानेन्द्रियों से (अश्वैः) अश्वों से, कर्मेन्द्रियों से (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (प्र) सर्वोत्तम (नृभिः) उत्तम मनुष्यों की सहायता से (नृवन्तः) सर्वोत्तम मानव (स्याम) होओ।

नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.3, ऋग्वेद 7.41.3 और यजुर्वेद 34.36 में समान है।

व्याख्या:-

हमें किस प्रकार की सम्पदा की प्रार्थना परमात्मा से करनी चाहिए?





सभी सुखों, वैभव और महिमा के देने वाले! हमें प्रगतिशील और प्रशंसनीय बुद्धि तथा विवेक देते हुए सत्य की सम्पदा या सत्य सम्पदा अर्थात् परमात्मा के ज्ञान वेद को प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम मार्ग की प्रेरणा दो और उपलब्ध कराओ।

सभी सुखों, वैभव और महिमा के देने वाले! हमारे अन्दर सर्वोत्तम गऊओं और अश्वों में से, सर्वोत्तम ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों में से सर्वोत्तम लक्षण पैदा करो। हम सर्वोत्तम मनुष्यों की सहायता से सर्वोत्तम मनुष्य बन सकें।

जीवन में सार्थकता:-

अपने जीवन को एक सच्चा मानव जीवन कैसे बनायें?

यदि आप सत्य की सम्पदा या सत्य सम्पदा को प्राप्त करना चाहते हो तो यह तरंगों के माध्यम से सीधा भगवान से प्राप्त होने वाला भगवान का ज्ञान है अर्थात् वेद। इस सत्य ज्ञान और विवेक को प्राप्त करने का एक ही मार्ग है ध्यान-साधना।

दूसरा हम प्रगतिशील बुद्धि की प्रार्थना करते हैं जिससे सबके कल्याण के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञ किये जा सकें। यह मानव जीवन का दूसरा स्तर है।

तीसरे स्तर पर, समाज से व्यवहार करते हुए हमें अपवाद समान सरल, गाय की तरह विनम्र होना चाहिए। हमारे कार्य त्वरित और अश्वों की तरह सक्रिय और ऊर्जावान होने चाहिए। हमें सत्यवादी होना चाहिए।

केवल इस प्रकार से ही हम अपने जीवन को एक सच्चा मानव बना सकते हैं जो दिव्यताओं, सुख, शांति और प्रगति से लदा हुआ हो।

### यजुर्वेद 34.37

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।  
उतोदितौ मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।।4।।

(उत) और (इदानीम्) इस समय (प्रातःकालीन वेला) (भगवन्तः) सुखों, वैभव और महिमा के स्वामी (स्याम) बनो (उत) और (प्रपित्व) सर्वोत्तम सुखों को प्राप्त करते हुए (उत) और (मध्ये) बीच में (अह्नाम्) दिन के (उत) और (उदिता) उदय होने पर (मघवन्) सुखों का सर्वोच्च स्वामी (सूर्यस्य) सूर्य का (वयम्) हम (देवानाम्) दिव्य (शक्तियों और लोगों) का (सुमतौ) सुन्दर मन और बुद्धि (स्याम) बनो।

नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.4, ऋग्वेद 7.41.4 और यजुर्वेद 34.37 में समान है।

व्याख्या:-

जीवन के सुखों को प्राप्त करते हुए हमारे मन की क्या अवस्था होनी चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



प्रातः वेला के इस समय सुखों, वैभव और महिमा के स्वामी बनो और सूर्योदय के समय तथा दिन के बीच में भी सर्वोत्तम सुखों को प्राप्त करते हुए हम सब दिव्य लोगों के अच्छे मन और बुद्धि में स्थापित हो सकें।

जीवन में सार्थकता:-

हमें दिव्य (शक्तियों और लोगों) के साथ नियमित संगति और उनका मार्गदर्शन क्यों बनाकर रखना चाहिए?

मानव जीवन के चार लक्ष्य अर्थात् पुरुषार्थ चतुष्टय क्या हैं?

जब कोई व्यक्ति जीवन में हर प्रकार के सुखों और सम्पदाओं को प्राप्त करना प्रारम्भ कर देता है तो इसकी प्रबल सम्भावनाओं होती है वह उन सुखों और सम्पदाओं के संग्रहण की अंधी दौड़ और तीव्र कर दे, अहंकार का विकास कर ले, अन्यो के प्रति अपने दायित्वों को अनदेखा कर दे और मानव जीवन के लक्ष्य अर्थात् परमात्मा की अनुभूति को भी अनदेखा कर दे।

इसलिए ऐसी सभी सम्भावनाओं को दूर रखने के लिए तथा मानव जीवन के लक्ष्य से भटकाव को दूर रखने के लिए यही श्रेयष्कर है कि हम महान् और दिव्य मन वाले लोगों की संगति और उनके मार्गदर्शन में स्थापित रहें, केवल यदा-कदा नहीं बल्कि सारा जीवन और प्रतिक्षण।

दिव्य मन वाले लोगों की संगति हमें पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् मानव जीवन के चार लक्ष्यों का स्मरण कराती रहती है – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष अर्थात् उचित व्यवहार, भौतिक सम्पदा की सार्थकता, इच्छाओं की पूर्ति और मुक्ति के लिए परमात्मा की अनुभूति। बीच के दो लक्ष्य अर्थात् अर्थ और काम, धर्म पर आधारित होने चाहिए और अन्तिम लक्ष्य मोक्ष पर केन्द्रित होने चाहिए।

सूक्ति :- (वयम् देवानाम् सुमतौ स्याम – अथर्ववेद 3.16.4, ऋग्वेद 7.41.4 और यजुर्वेद 34.37) हम सब दिव्य लोगों के अच्छे मन और बुद्धि में स्थापित हो सकें।

### यजुर्वेद 34.38

भग एव भगवाँ अस्तु देवस्तेना वयं भगवन्तः स्याम।

तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरेता भवेह।।38।।

(भग) सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (एव) केवल (भगवान्) सर्वोच्च स्वामी (अस्तु) हो (देवः) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (तेन) उससे (वयम्) हम (भगवन्तः) सभी सुखों, वैभव और महिमा से सम्बद्ध (स्याम) हो (तम्) वह (त्वा) आपका (भग) सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (सर्व) सब (इत) यहाँ (जोहवीति) मैं बुलाता हूँ, प्रशंसा करता हूँ (सः) वह (नः) हमें (भग) सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (पुरः एता) हमारा नेतृत्व करते हुए, हमें प्रगतिशील बनाते हुए (भव) हो (इह) यहाँ, इस जीवन में।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.5, ऋग्वेद 7.41.5 और यजुर्वेद 34.38 में एक शब्द के अन्त के साथ समान है। ऋग्वेद 7.41.5 और यजुर्वेद 34.38 में 'जोहवीति' आया है जबकि अथर्ववेद 3.16.5 में 'जोहवीमि' शब्द है। किन्तु अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं है।

व्याख्या:-

सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला सर्वोच्च स्वामी कौन है?

सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला केवल एक ही सर्वोच्च स्वामी है। हम, उसके दिव्य लोग, सभी सुखों, वैभव और महिमा से सम्बद्ध रहें।

सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाले! आपके सभी लोग और मैं आपको यहाँ बुलाते हैं और आपकी प्रशंसा करते हैं। वह, सभी सुखों, वैभव और महिमा को देने वाला, हमारा नेतृत्व करे और हमें यहाँ, इस जीवन में प्रगतिशील बनायें।

जीवन में सार्थकता:-

हमें दिव्य कौन बना सकता है और इस दिव्यता को बनाये रखने में सहायता कौन कर सकता है? देखने में, प्रत्येक बालक यह महसूस करता है कि उसको सभी सुख देने वाले उसके माता-पिता हैं। इसी प्रकार, नौकरी करने वाले सभी लोग यह महसूस करते हैं कि उनके नियोक्ता उन्हें सम्पदा देने वाले होते हैं। बेशक, क्रियात्मक रूप से यह सत्य है, परन्तु, आध्यात्मिक रूप से, हमें यह अनुभूति प्राप्त करनी चाहिए कि सभी सुखों का वास्तविक सर्वोच्च स्वामी और हमें देने वाला केवल परमात्मा ही है। उसके सर्वोच्च खजाने में से हमें अपना हिस्सा हमारे पूर्व कर्मों के अनुसार ही मिलता है।

इसलिए हमें उस सर्वोच्च स्वामी को बुलाना चाहिए और उसकी प्रशंसा करनी चाहिए जो हमें भविष्य में प्रगति के लिए अच्छे प्रकार से नेतृत्व दे सकता है। भगवान के साथ सम्पर्क हमारी प्रकृति और व्यवहार को दिव्य बना सकता है। इसी प्रकार अपने पारिवारिक और सामाजिक जीवन में हमें अपने माता-पिता तथा नियोक्ताओं के साथ विनम्र सम्बन्ध बनाकर रखने चाहिए, क्योंकि परमात्मा इन वरिष्ठ लोगों के माध्यम से ही सभी सुखों को हमें देता है।

### यजुर्वेद 34.39

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय ।  
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु ॥6॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(सम – नमन्त से पूर्व लगाकर) (अध्वराय) अहिंसक और शुभ गुण वाले व्यवहार के लिए (उषसः) ऊषाकाल में ब्रह्मवेला में (नमन्त – सम नमन्त) समुचित रूप से हमारे नमन प्रस्तुत हैं (दधिक्रावा इव) पीठ पर बोझ लादे हुए एक अश्व की तरह, एक संकल्पवान व्यक्ति की तरह (शुचये) पवित्रता के साथ (पदाय) लक्ष्य प्राप्त करने के लिए (अर्वाचीनम्) नया (वसुविदम्) सम्पदा प्राप्त करते हुए (भगम्) समस्त सम्पदा का देने वाला (नः) हमें (रथम् इव अश्वा) रथ को खींचते हुए एक अश्व की तरह (वाजिनः) विशेष बुद्धि (आ वहन्तु) लक्ष्य तक ले जाता है।

नोटः— यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.6, ऋग्वेद 7.41.6 और यजुर्वेद 34.39 में एक शब्द के अन्तर के साथ समान है। ऋग्वेद 7.41.6 और यजुर्वेद 34.39 में 'नः' आया है जबकि अथर्ववेद 3.16.6 में 'मे' का प्रयोग हुआ है। 'नः' का अर्थ है हमें और 'मे' का अर्थ है मुझे। इस प्रकार अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं आता।

व्याख्याः—

ऊषाकाल के लाभों के साथ कौन जुड़ता है?

सूर्योदय से पूर्व, ऊषाकाल, ब्रह्मवेला में हम अहिंसक व्यवहार प्राप्त करने के लिए तथा पीठ पर बोझ लादे हुए एक अश्व के समान अर्थात् एक संकल्पवान व्यक्ति के समान हम अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ते हुए अपना नमन प्रस्तुत करते हैं।

सभी सुखों को देने वाले की तरह, सभी नई सम्पदाओं को प्राप्त करते हुए, विशेष विद्वान् लोग मेरा मार्गदर्शन लक्ष्य की तरफ करें जैसे एक अश्व रथ को खींचता है।

जीवन में सार्थकताः—

ऊषाकाल में विशेष क्या होता है?

विशेष विद्वान् कौन होते हैं?

सूर्योदय, ऊषाकाल, ब्रह्मवेला उन लोगों के लिए अत्यन्त फलदायक है जो अपने जीवन को अहिंसक और पवित्र बनाकर एक संकल्पशील व्यक्ति की तरह अपने लक्ष्य की तरफ प्रगति करना चाहता है। प्रत्येक प्रातःकाल सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, सक्रियता, ऊर्जा, ज्ञान और स्वाभाविक रूप से पवित्रता के खजाने खोल देता है।

विशेष विद्वानों से अभिप्राय है वे लोग जिन्होंने दिव्य निर्देशों को समझ लिया है और अपना लिया है। ऐसे लोगों की तुलना रथ को खींचने वाले अश्वों से की जाती है, क्योंकि उनका जीवन वास्तव में हमें भी उनका अनुशरण करने की प्रेरणा देता है। वे लोग केवल ज्ञान का बंडल नहीं हैं, बल्कि वे दिव्यता के कार्यवाहक हैं।

यजुर्वेद 34.40

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।  
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

(अश्वावती) ऊर्जा को धारण करते हुए (गोमतीः) सर्वोत्तम और विनम्र वाणियों को धारण करते हुए (नः) हमारा (उषासः) सूर्योदय से पूर्व ऊषाकाल, ब्रह्मवेला (वीरवतीः) बहादुर पुत्रों को धारण करते हुए (सदम्) घर को (उच्छन्तु) प्रकाशित करो (भद्राः) श्रेष्ठ और कल्याणकारी कार्यों को करते हुए (घृतम् दुहानाः) दूध की वर्षा करते हुए (विश्वतः प्रपीताः) सभी दिशाओं से स्वस्थ रहो (यूयम्) तुम (पात) संरक्षण करो (स्वस्तिभिः) कल्याण के साथ (सदा) सदैव (नः) हमें ।

नोटः— यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.7, ऋग्वेद 7.41.7 और यजुर्वेद 34.40 में समान है ।

व्याख्याः—

ऊषा हमारे लिए क्या कर सकती है?

ऊषा, सूर्योदय से पूर्व की किरणें, आप ऊर्जा धारण करते हो, सर्वोत्तम और विनम्र वाणियाँ धारण करते हो और बहादुर पुत्रों को धारण करते हो; आप सभी श्रेष्ठ और कल्याणकारी कार्यों को करते हो । कृपया हमारे घरों को प्रकाशित करो । आप दूध की वर्षा करते हुए अपने कल्याण से सदैव हमारा संरक्षण करते हो ताकि हम सभी दिशाओं से स्वस्थ रह सकें ।

जीवन में सार्थकताः—

श्रद्धावान् महिलाओं की तुलना ऊषा से क्यों की जाती है?

ऊषाकाल में उठने के अनेक प्रकार के लाभ हैं । कोई भी व्यक्ति इनका अनुभव कर सकता है । सभी ऋषियों, महान् और दिव्य संतों के जीवन यह सिद्ध करते हैं कि प्रातः जल्दी उठने वालों पर दिव्यता बरसती है । घर में समर्पित महिलाओं की तुलना ऊषा से की जाती है, क्योंकि वे प्रातः जल्दी उठकर समूचे परिवार के लिए सौभाग्य के द्वार खोलती हैं, परमात्मा की भक्ति का वातावरण उत्पन्न करते हुए समूचे परिवार को भक्ति मार्ग पर चलने की प्रार्थना और प्रेरणा देती हैं ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



### यजुर्वेद 36.3

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।  
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ऋग्वेद 3.62.10, यजुर्वेद 3.35, 30.2, 36.3, सामवेद 1462

(ओ३म्) ब्रह्माण्ड की ध्वनि जो सर्वत्र तरंगित है (परमात्मा का मूल नाम) (भूः) होना, कार्य करना, भूमि के नीचे (भुवः) ज्ञान प्राप्त करना (स्वाहाः) ब्रह्म की अनुभूति, अंतरिक्ष (तत्) वह (परमात्मा) (सवितु) निर्माता (परमात्मा), सूर्य (वरेण्यम्) वरण करने योग्य (भर्गो) प्रभाव, सर्वोच्च बुद्धि (देवस्य) दिव्य की, चाहने योग्य, प्रकाशित (धीमहि) हम एकाग्र करें और उस पर ध्यान करें (धियो) बुद्धियाँ (यः) जो (नः) हमारे (प्रचोदयात्) प्रेरित करें, उत्तम कार्यों के लिए ।

व्याख्या :-

वह (परमात्मा) धरती के नीचे है; वह वायु मण्डल में है; वह अंतरिक्ष में है। वह हमारा कार्य रूप है और हमारा लक्ष्य है, जो हम प्राप्त करना चाहते हैं; वह उस ज्ञान में है, जो हम अर्जित करना चाहते हैं।

वह निर्माता वरण करने के योग्य है। हम उसके प्रभाव और उस सर्वोच्च दिव्य प्रकाशित और सर्वोच्च बुद्धि पर ध्यान एकाग्र करें और उसी पर ध्यान लगायें।

वह हम सबकी बुद्धियों को उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

यदि सविता को सूर्य माने तो एक वाक्य बनता है:- सूर्य का प्रभाव सर्वत्र विद्यमान, हमारे सभी कार्यों में, ज्ञान में और अनुभूतियों के पथ पर सूर्य वरण करने के योग्य है। हम उस सूर्य के प्रभाव पर अर्थात् सूर्य उदय की प्रातःकालीन किरणों पर ध्यान एकाग्र करें, जिससे हमारी बुद्धि उत्तम कार्यों के लिए प्रेरित हो।

जीवन में सार्थकता:-

गायत्री मन्त्र हमें क्या प्रेरणा देता है?

यह मन्त्र जीवन के तीन मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देता है :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



1. वह (परमात्मा) धरती के नीचे है; वह वायु मण्डल में है; वह अंतरिक्ष में है। वह हमारा कार्य रूप है और हमारा लक्ष्य है, जो हम प्राप्त करना चाहते हैं; वह उस ज्ञान में है, जो हम अर्जित करना चाहते हैं।
2. हम उसके प्रभाव और उस सर्वोच्च दिव्य प्रकाशित और सर्वोच्च बुद्धि पर ध्यान एकाग्र करें और उसी पर ध्यान लगायें क्योंकि वह निर्माता वरण करने के योग्य है।
3. वह हम सबकी बुद्धियों को उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

ओम

### यजुर्वेद 36.10

शं नो वातः पवतां शं नस्तपतु सूर्यः ।  
शं नः कनिकददेवः पर्जन्यो अभिवर्षतु ॥ 10 ॥

(शम) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (नः) हमारा (वातः) वायु (पवताम्) चलना (शम) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (नः) हमारा (तपतु) चमक की गर्मी (सूर्यः) सूर्य (शम) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (नः) हमारे लिए (कनिकदत्) गर्जना करते हुए (देवः) दिव्य (पर्जन्यः) बादल (अभिवर्षतु) हर तरफ से बरसते हैं।

नोट: अथर्ववेद 7.69.1, यजुर्वेद 36.10 और यजुर्वेद 36.11 में अनेकों समानताएँ हैं। अथर्ववेद 7.69.1 की पहली पंक्ति यजुर्वेद 36.10 के समान है। अथर्ववेद 7.69.1 की दूसरी पंक्ति यजुर्वेद 36.11 के समान है।

व्याख्या:-

प्रकृति की विपरीत शक्तियाँ जैसे सूर्य तथा वायु, दिन तथा रात्रि, किस प्रकार हमारी शांति, प्रसन्नता और कल्याण के लिए कार्य करती हैं?

- बहती हुई वायु हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण देने वाली हो।
- चमके हुए सूर्य की गर्मी हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण देने वाली हो।
- सारे संसार पर गर्जना करते हुए और वर्षा करते हुए बादल हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण देने वाले हों।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकर्ता :-

सूर्य, वायु और मेघों के तीन आयाम कौन से हैं?

जल चक्र का विज्ञान क्या है?

कल्याणकारी कार्यों के लिए दिव्य प्रेरणा क्या है?

प्राणायाम का अध्यात्मिक विज्ञान क्या है?

**अधिभौतिक अर्थ :-** सूर्य की गर्मी, बहती हुई वायु और गरजते हुए बादल जो सारे संसार पर वर्षा करते हैं, तीनों जल चक्र के तीन तत्त्व हैं। जो धरती पर सभी जीवों के सर्वोच्च कल्याण का विज्ञान हैं और जिसके बिना धरती पर जीवन असम्भव हो जायेगा।

**अधिदैविक अर्थ :-** तीन दिव्य शक्तियाँ, जिनकी प्रकृति एक-दूसरे से भिन्न हैं, सबके कल्याण के लिए पूर्ण सद्भाव के साथ इकट्ठे कार्य करती हैं, इसका सामान्य कारण है कि वे दिव्य हैं और उनके कोई व्यक्तिगत हित व अहंकार नहीं टकराते। सूर्य की ऊर्जा गरम होती है, वायु और जल की प्रकृति ठंडी होती है। इस कार्य प्रणाली से हमें एक दिव्य प्रेरणा लेनी चाहिए कि अपनी-अपनी प्रकृति के बावजूद, हम सबको सबके भले के लिए ही कार्य करना चाहिए।

**आध्यात्मिक अर्थ :-** आध्यात्मिक मार्ग पर एक योगी प्राणायामा अभ्यासों के द्वारा अपने प्राणों अर्थात् श्वासों का विकास कर लेता है तो वह इससे दिव्य प्रकाश अर्थात् ज्ञान और उच्च चेतना की गर्मी का विकास कर लेता है। सूर्य की तरह वह बल की वृद्धियों के बादलों को तोड़कर सबके कल्याण के लिए दिव्यता की वर्षा करता है।

### यजुर्वेद 36.11

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयतां।

शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या।

शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ॥११॥

(अहानि) दिन, व्यर्थ न करने योग्य (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (भवन्तु) होओ (नः) हमारा (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (रात्रीः) रात (प्रति) की तरफ, के लिए (धीयताम्) धारण किया जाये (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (नः) हमारा (इन्द्राग्नी) सर्वोच्च नियंत्रक तथा सर्वोच्च ऊर्जा (भवताम्) होवे (अवोभिः) अपने संरक्षण के साथ (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (नः) हमारा (इन्द्रावरुणा) सर्वोच्च नियंत्रक तथा सर्वोच्च शासक (रातहव्या) प्राप्त करने योग्य सुख (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला

(नः) हमारे लिए (इन्द्रापूषणा) सर्वोच्च नियंत्रक और पोषण करने वाला (वाजसातौ) भोजन आदि उपलब्ध कराने के लिए (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (इन्द्रासोमा) सर्वोच्च नियंत्रक तथा शुभ गुण, दिव्य ज्ञान (सुविताय) सुविधाजनक कार्यों की प्रेरणा के लिए (शम् यः) जो शांति, प्रसन्नता और कल्याण के लिए हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





**नोट:** अथर्ववेद 7.69.1, यजुर्वेद 36.10 और यजुर्वेद 36.11 में अनेकों समानताएँ हैं। अथर्ववेद 7.69.1 की पहली पंक्ति यजुर्वेद 36.10 के समान है। अथर्ववेद 7.69.1 की दूसरी पंक्ति यजुर्वेद 36.11 के समान है।

**व्याख्या:—**

भिन्न—भिन्न दिव्य शक्तियाँ किस प्रकार हमारी शांति, प्रसन्नता और कल्याण के लिए कार्य करती हैं?

- दिन, जो व्यर्थ करने योग्य नहीं होता, हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण देने वाला हो।
- रात्रि भी हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण को देने के लिए धारण की जाये।
- सर्वोच्च नियंत्रक अपनी ऊर्जा के साथ हमारे लिए शांति और कल्याण का देने वाला हो।
- सर्वोच्च नियंत्रक अपने जल अर्थात् तरल ऊर्जाओं के साथ हमारे लिए शांति और कल्याण का देने वाला हो।
- सर्वोच्च नियंत्रक पोषण करने वाली भूमि के साथ हमारे लिए शांति और कल्याण का देने वाला हो।
- सर्वोच्च नियंत्रक सोम के साथ अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान आदि के साथ हमारे लिए शांति और कल्याण का देने वाला हो।

यह सभी दिव्य शक्तियाँ हमारी शांति, प्रसन्नता और कल्याण के लिए हमें कार्यों को करने की प्रेरणाएँ देने वाली हों।

**जीवन में सार्थकता:—**

हम दिव्य कैसे बन सकते हैं?

परमात्मा, सर्वोच्च नियंत्रक, अपनी भिन्न—भिन्न दिव्य शक्तियों के साथ अनेक प्रकार से हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण सुनिश्चित करते हैं। वे ताप ऊर्जा के साथ हमारा संरक्षण करते हैं

वे जल के माध्यम से हमें सभी सुख देते हैं।

वे पृथ्वी पर सभी जीवों का पोषण करते हैं।

परमात्मा की सभी शक्तियाँ दिव्य कहलाती हैं, क्योंकि वे परमात्मा से शक्तियाँ प्राप्त करती हैं और सबके कल्याण के लिए इन शक्तियों का प्रयोग करती हैं।

सभी मनुष्यों को दिव्य बनने के लिए इसी अनुपात में दिव्यता के सिद्धान्त का विकास करके उसे अपने जीवन में धारण करना चाहिए।

हमें परमात्मा से जो भी शक्तियाँ या सम्पदा मिलती है, हम उसका प्रयोग सर्वव्यापक कल्याण के लिए करें। ऋषि बनो, दूसरों के लिए जिओ।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



### यजुर्वेद मन्त्र 36.12

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।  
शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

(शम्) शान्ति और कल्याण देने वाला (नः) हमें (देवीः) दिव्य, विजेता (अभिष्टये) आक्रमण के लिए (बुराईयों और रोगों पर) (आपः) जल (भवन्तु) हो (पीतये) संरक्षण के लिए (शम् योः) चिकित्सा और रोगों को दूर रखने के लिए (अभि स्रवन्तु) चारों तरफ बहता है (भीतर पीने के लिए और बाहर स्नान आदि के लिए) (नः) हमारे ।

**नोट :-** यह मन्त्र ऋग्वेद 10.9.4 में समान रूप से और सामवेद 33 में एक परिवर्तन के साथ आया है । सामवेद 33 में 'आपो' के स्थान पर 'शं नो' आया है, क्योंकि सामवेद 33 का देवता 'अग्नि' है 'आपः' नहीं ।

**व्याख्या :-**

जल हमारे उत्तम स्वास्थ्य को कैसे सुनिश्चित करता है?

दिव्य विजेता जल हमारे लिए शान्तिदाता और कल्याण करने वाला है । यह हमारी बुराईयों और रोगों पर आक्रमण करता है । यह हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करता है । यह अन्दर से और बाहर से अर्थात् पीकर और बाहर स्नान आदि से हमारे रोगों का इलाज करता है और रोगों को दूर भी रखता है ।

**जीवन में सार्थकता :-**

जल किस प्रकार भोजन भी है और औषधि भी है?

जल हमारे लिए भोजन भी है और औषधि भी है । प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में जल को पीना हमारे लिए भोजन तथा औषधि दोनों के रूप में कार्य करता है । व्रत के समय, जल केवल भोजन होता है । औषधि के रूप में जल हमारे शरीर से विजातीय तत्वों को निकालता है । जल से हम उच्च रक्तचाप, हानिकारक कोलेस्ट्रॉल, मधुमेह, कब्ज, लीवर की सफाई और कीडनी की कमजोरियों का उपचार कर सकते हैं । सामान्य तापमान वाले जल से प्रतिदिन स्नान करना हमारी त्वचा को साफ और स्वस्थ बनाता है । पीने के लिए सामान्य तापमान वाला या गरम जल का ही प्रयोग करना चाहिए । जबकि स्नान के लिए सामान्य तापमान या भूमिगत जल का प्रयोग किया जाना चाहिए ।

### यजुर्वेद मन्त्र 36.14

Yajur Veda 36.14

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



महेरणाय चक्षसे ।।

(आपः) जल, ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ (हिष्ठाः) निश्चित रूप से हैं (मयोभुवः) शान्ति, कल्याण और आनन्द को उत्पन्न करने और देने वाले (ताः) वे (नः) हमें (ऊर्जे) ऊर्जाओं में (शरीर, मन और आत्मा की) (दधातन) हमें धारण करते हैं (महे) शक्तिशाली (रणाय) शक्ति, वैभव (चक्षसे) ब्रह्म का पूर्ण ज्ञान, सभी इन्द्रियों का, अनुभूति की शक्ति ।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 10.9.1 और यजुर्वेद 11.50 में समान रूप से आया है ।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में जल का क्या महत्त्व है?

जल जो ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाएँ हैं, निश्चित रूप से शान्ति, कल्याण और आनन्द को उत्पन्न करने वाली और देने वाली हैं । वे हमें ऊर्जाओं में स्थापित करती हैं (शरीर, मन और आत्मा की) जो ब्रह्म के सम्पूर्ण ज्ञान, सभी इन्द्रियों के सम्पूर्ण ज्ञान और अनुभूति की शक्ति से सम्बन्धित शक्तिशाली वैभव है ।

जीवन में सार्थकता :-

क्या जल चिकित्सा में सहायक होता है?

जल ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जा किस प्रकार है?

जल हमारे संकल्पों को किस प्रकार बल प्रदान करता है और हमारी आध्यात्मिक प्रगति में सहायक होता है? हमारी तीनों स्तरों पर ऊर्जाओं का मुख्य स्रोत और भौतिक तथा आध्यात्मिक पूर्ण विकास का स्रोत जल ही है ।

हमारी शारीरिक और मानसिक समस्याओं का इलाज करने के लिए जल चिकित्सा कई प्रकार से की जाती है ।

सामान्य तापमान वाले जल को पीना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है । यह शरीर को जल से परिपूर्ण रखता है और विजातीय तत्वों को बाहर करता है । हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि सब्जियों आदि में विद्यमान जल तत्व पकाने की प्रक्रिया में कम न हो । अम्लीय जल हमारे शरीर को बुरी तरह से प्रभावित करते हैं ।

हमें जल के अनेक चिकित्सा लक्षणों के प्रति चेतन होना चाहिए :- (1) पाचन क्रिया में सहायता करता है, (2) शरीर से मलों के निष्कासन में सहायता करता है, (3) ठंडक देकर प्यास बुझाता है, (4) तनाव मुक्त विश्राम देता है, (5) खाँसी आदि गले की समस्याओं का इलाज करता है, (6) उल्टी करने में सहायक होता है, (7) अग्नि को शान्त करने में सहायक होता है, (8) रक्त संचार में सहायता करता है, (9) ठंडक का प्रभाव पैदा करता है, (10) ऊर्जा को सक्रिय करता है, (11) वजन कम करने में सहायता करता है, (12) जीवाणुओं को मारकर शरीर को कमजोर होने से बचाता है, (13) तापमान को कम करने में सहायता करता है, (14) कठोरता या तनाव को मुलायम करता है, (15) दर्दों आदि को कम करता है, (16) मूत्र की मात्रा को बढ़ाता है, (17) पसीने के निर्माण में सहायता करता है, (18) बर्फीला ठंडा पानी शरीर को सुन्न करने में सहायता

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



करता है, (19) शरीर का संतुलन बनाये रखने में सहायता करता है, (20) अच्छी निद्रा को प्रेरित करता है उदाहरण के लिए गर्म पानी से पैरों को धोने से अच्छी नींद आती है, (21) इसकी भाप श्वसन तन्त्र की समस्याओं को दूर करती है, (22) जोड़ों को गतिशील बनाने में सहायता करता है।

ब्रह्माण्ड की ऊर्जा सबसे अधिक शक्तिशाली है। ब्रह्माण्ड की ऊर्जा प्रत्येक कोशिका में और सबसे छोटे कण में भी विद्यमान है। क्योंकि धरती पर जल की मात्रा 70 प्रतिशत है, स्वाभाविक रूप से, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का वही अनुपात जल में भी विद्यमान है। इसलिए इसे ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जा कहते हैं।

यदि हम जल के प्रति अपनी चेतना बढ़ा लें तो निश्चित रूप से हम अपने शरीर, अपने मन और आत्मा सबकी शक्तियों को बढ़ा सकते हैं।

जल की स्मृति होती है। इसलिए धार्मिक क्रियाओं में या एक नियमित दिनचर्या की तरह अपने संकल्पों और प्रार्थनाओं को जल के समक्ष समर्पित करना चाहिए। इसीलिए जल पर उपवास को आध्यात्मिक प्रगति के लिए लाभकारी माना जाता है, क्योंकि इससे हमारे संकल्प और प्रार्थनाएँ बलशाली होते हैं।

स्नान करते समय, जल पीते समय और अन्य लोगों को जल उपलब्ध कराते समय इस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए।

**यजुर्वेद मन्त्र 36.15**

**Yajur Veda 36.15**

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।

उशतीरिव मातरः॥

(यः) वह (वः) आपका (शिवतमः) आनन्ददायक, सबका कल्याण करने वाला (रसः) तरल, ऊर्जाओं का निचोड़ (तस्य) उसका (भाजयत्) भाग (इह) यहाँ, इस जीवन में (नः) हमारे लिए (उशतीः) प्रेम करने वाला, आकर्षण (इव) जैसे कि (मातरः) माताएँ।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 10.9.2 तथा यजुर्वेद 11.51 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

जल की दिव्यता क्या है?

जल की तुलना माँ के दूध से क्यों की जाती है?

इस सूक्त के देवता 'आपः' अर्थात् जल से प्रार्थना की गई है।

आपके आनन्ददायक तरल अर्थात् जल, ब्रह्माण्डीय ऊर्जाओं का निचोड़, सबके लिए आनन्ददायक है और सबका कल्याण करता है। अतः अपनी तरल ऊर्जा को हमारे साथ यहाँ, इसी जीवन में, बांटें जिस प्रकार एक प्रेम करती हुई माँ अपनी तरल ऊर्जा अर्थात् छाती के दूध को अपने बच्चे के साथ बांटती है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें जल का प्रयोग कैसे करना चाहिए?

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





जल की तुलना माँ के दूध से की गई है जो जन्म के बाद बच्चे को दी जाने वाली पहली ऊर्जा है। जल को भी ब्रह्माण्डीय ऊर्जाओं के निचोड़ का मुख्य तत्त्व समझना चाहिए। जल सभी जीवों के अच्छे स्वास्थ्य और रोगों के इलाज के लिए आनन्ददायक है। इसे दिव्यताओं का निचोड़ समझकर वैसे ही पीना चाहिए जैसे माँ के दूध को पिया जाता है, धीरे-धीरे एक-एक घूंट करके उसके साथ मुँह में पैदा होने वाली लार को मिलाकर। जल पीते समय हमें इसकी दिव्य शक्तियों के प्रति चेतन रहना चाहिए।

### यजुर्वेद मन्त्र 36.16

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।  
आपो जनयथा च नः ॥

(तस्मा) उसके लिए (ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जा के लिए) (अरम् गमाम) हम बिना देरी के आते हैं, हम समुचित प्रयास करते हैं (वः) आपके (यस्य) जिसके लिए (क्षयाय) आवास या उत्पादन (जिन्वथ) हमें प्रेरित करो, हमें उत्तेजित करो (आपः) जल (जनयथा) हमें ताकत और जीवनी शक्ति प्रदान करो, उत्पादन करने का बल (च) और (नः) हमें।

नोट :- यह मन्त्र ऋग्वेद 10.9.3 और यजुर्वेद 11.52 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

हमें जल की आवश्यकता क्यों होती है?

आपकी ब्रह्माण्ड की तरल ऊर्जाओं अर्थात् जल के लिए हम बिना देरी के आपके निकट आते हैं, हम समुचित प्रयास करते हैं, जिसके आवास या उत्पादन के लिए आप हमें प्रेरित करते हो और उत्तेजित करते हो। जल हमें ताकत, जीवनी शक्ति और उत्पादन का बल प्रदान करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

जल हमें उत्पादन का बल किस प्रकार प्रदान करते हैं?

सभी खाद्य पदार्थों के आवास और उत्पादन के लिए हमें जल की आवश्यकता होती है जैसे – अनाज, फल और सब्जियाँ आदि। क्योंकि सभी प्राणियों को ताकत और जीवनी शक्ति प्रदान करने के लिए हमें खाद्य पदार्थों को पैदा करने की प्रेरणा दी गई और उत्तेजित किया गया। जल हमारे अस्तित्व अर्थात् हमारे पालन-पोषण और शक्ति संग्रहण के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व है। बिना जल के कुछ भी पैदा नहीं किया जा सकता।

जल हमें पैदा करने का बल देता है। जैसे – जल अनउपजाऊ भूमि को भी खाद्य पदार्थ पैदा करने के योग्य बना देता है। 'जनयथा' शब्द बच्चे पैदा न होने के उपचार का संकेत करता है। जो लोग, पुरुष या स्त्री, बच्चे पैदा करने में सक्षम नहीं हैं उन्हें नियमित रूप से इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए अधिक मात्रा में जल को औषधि की तरह पीना चाहिए।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



यहाँ यह कहना असंगत नहीं होगा कि जीवों के अस्तित्व के लिए 5 तत्त्वों में से प्रत्येक तत्त्व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह सूक्त जल के महत्त्व को उजागर करता है। क्योंकि इसका देवता अर्थात् दिव्य शक्ति 'आपः' अर्थात् जल है।

**This file is incomplete/under construction**

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171